

ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸਿੱਖੀ ਵਿਰਾਟ (ਪਾਠ) ਲਈ



ਕੁਲ ਕ੍ਰਮਕ - 2

ਕਾਮਰਾਡ : ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਹਲਾਕਾਸ਼ੀ - ਫਰੀਦਕੋਟ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ

ਪ੍ਰੋਫ ਕ੍ਰਮਕ - 3 - B

ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਕਾ ਨਾਮ - ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਹਲਾਕਾਸ਼ੀ - ਫਰੀਦਕੋਟ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ

ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਹਲਾਕਾਸ਼ੀ
ਫਰੀਦਕੋਟ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ



ಪ್ರಜ್ಞಾಪತ್ರ (ಸರ್ಕಾರಿ) ಸಂಖ್ಯೆ ೨೦೧೯/೨೦೧೯
ಪ್ರಜ್ಞಾಪತ್ರ

ಓರ್ಡರ್-೨ ಸಂಖ್ಯೆ ೨೦೧೯/೨೦೧೯

ಓರ್ಡರ್-೧ ಸಂಖ್ಯೆ ೨೦೧೯/೨೦೧೯

೨೦೧೯

ಪ್ರಜ್ಞಾಪತ್ರ ಸಂಖ್ಯೆ ೨೦೧೯/೨೦೧೯
ಪ್ರಜ್ಞಾಪತ್ರ

ಪ್ರಜ್ಞಾಪತ್ರ (೨)

(LIBRARY CLASSIFICATION : PRACTICAL)

ಪ್ರಜ್ಞಾಪತ್ರ : ಪ್ರಾಯೋಗಿಕ

प्रथम मुद्रण - 2009

विश्वविद्यालय - म. प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल म.प्र.

प्रकाशन कोड - BLIS

पाठ्यक्रम - पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक

खण्ड क्रमांक - 2

खण्ड शीर्षक - पुस्तकालय वर्गीकरण : प्रायोगिक

इकाई लेखक - इकाई - 1 डॉ. जे. एन. गौतम, यालियर

इकाई - 2 डॉ. जे. एन. गौतम, यालियर

खण्ड संपादन : डॉ. संजीव सराफ, डिप्टी लाइब्रेरियन, काशी हिन्दू वि. वि. वाराणसी

समन्वय समिति - डॉ. आशा स्वल्प, निदेशक, मुद्रण एवं वितरण

- मेजर प्रदीप खरे, सलाहकार, मुद्रण एवं वितरण

म. प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय

सभी अधिकार सुरक्षित। म. प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना इस रचना का कोई भी अंश किसी भी तरह से पुनः निरमाण, मिश्रण या अन्य विधियों द्वारा नहीं किया जा सकता।

इस पुस्तक में छपे विचार लेखक/लेखकों के हैं, न कि म.प्र.भो.मु.वि.वि. के।

म. प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों की जानकारी हेतु सम्पर्क करें :

कुलसचिव, म.प्र.भो.मु.वि.वि., राजा भोज मार्ग (कोलार रोड) चूना भट्टी, दामखेड़ा, भोपाल - 462016

प्रकाशक - कुलसचिव, म.प्र.भो.मु.वि.वि., भोपाल म.प्र.

दूरभाष - 0755-2492093

वेबसाइट - www.bhojvivaaluniversity.com

23

इकाई-2 विज्ञान वर्गकथा

5

इकाई-1 सांस्कृतिक विज्ञान वर्गकथा

प्रश्नपत्र : सांस्कृतिक विज्ञान वर्गकथा

2

वर्ग

सर्व विद्यार्थी

विद्यार्थी

श्री. एन. आर्. एस. - 3 (ग)

इस खंड के माध्यम से हम पुस्तकालय की महत्वपूर्ण वर्गीकरण पद्धतियों का अध्ययन करेंगे। सांवांमौमिक दशमालव वर्गीकरण पद्धति द्विबन्धु वर्गीकरण पद्धति के उद्भव एवं विकास एवं मुडीसी के विभिन्न संस्करण सी.सी. के मौलिक सिद्धान्त अंकन व्यवस्थापन, उपर्सज मौलभूत नियम एवं संरचना पर प्रकाश डाला गया है।

परिचय (Introduction)

खण्ड - 2 पुस्तकालय वर्गीकरण : प्रायोगिक

सामयिक दशमलव वर्गीकरण
(UNIVERSAL DECIMAL CLASSIFICATION)



1.0	विषय प्रवेश (Introduction)
1.1	उद्देश्य (Objectives)
1.2	उद्भव एवं विकास (Origin and Development)
1.3	यूडीसी के विभिन्न संस्करण (Different Editions of UDC)
1.4	संरचना (Structure)
1.4.1	अंकन एवं व्यवस्थापन (Notation and Arrangement)
1.4.2	चिन्ह एवं चिह्नका महत्व (Symbols and their Significance)
1.4.3	सहायक सारणीयाँ (Tables)
1.4.4	सहायक सारणीयाँ (Auxiliary Tables)
1.4.5	उद्धरण क्रम (Citation Order)
1.4.6	फाइलिंग क्रम (Filing Order)
1.4.7	समानान्तर विभाजन (Parallel Division)
1.4.8	यूडीसी एवं कम्प्यूटर (UDC and Computers)
1.5	सारांश (Let us Sum up)
1.6	स्व - जाँच अभ्यास (Self-check Exercise)

सामयिक दशमलव वर्गीकरण पद्धति (यूडीसी) अत्यन्त महत्वपूर्ण पद्धति है। यह पद्धति दशमलव वर्गीकरण पद्धति (डीडीसी) पर आधारित है तथा इसका सर्वप्रथम प्रकाशन सन् 1905 में 'Classification Decimale Universale' शीर्षक के अन्तर्गत पॉल ऑटलेट एवं हेनरी ला फान्देन द्वारा किया गया था। इण्टरनेशनल फेडरेशन फॉर इनफार्मेशन एण्ड डॉक्यूमेंटेशन (FID) द्वारा समय-समय पर इसे संशोधित एवं अद्यतन किया जाता है। यूडीसी, डीडीसी पर आधारित होने पर भी इसकी संरचना (Structure) एवं विशेषताएँ भिन्न हैं। डीडीसी परिगणनात्मक पद्धति है जबकि यूडीसी परिगणनात्मक एवं संश्लेषणात्मक (Synthetic) पद्धति के अन्तर्गत आती है। यही कारण है कि

है जिसका प्रथम संस्करण 1897-1905 के बीच 35 भागों में प्रकाशित हुआ था। इसका प्रथम यूईसी वास्तविक रूप में डीसी के पाठ्य संस्करण (1989) पर आधारित एवं विस्तारित

(Expand) एवं उपयोग (Use) करना चाहते हैं। डॉ. डीवी ने अपनी सहमति प्रदान कर दी। थी। आईआईटी ने डीवी को पत्र लिखकर अर्जमति मांगी कि हम अपने प्रोजेक्ट के लिए इसे विस्तारित पद्धति के उपयोग बिना यह सम्भव नहीं हो सका। उस समय डीसी वर्गीकरण पद्धति ही उपलब्ध समस्त प्रकाशित सूचना की वर्गीकृत काई इन्डक्स निर्मित/तैयार करने से है। लेकिन वर्गीकरण किया। इसका उद्देश्य Unrepertoire Bibliographique Universel को निर्मित करना था। इसका तात्पर्य प्रारंभ में दो बैल्जियन्स पॉल ऑटलेट एवं हेनरी ला फॉन्टेन ने एक प्रोजेक्ट पर कार्य प्रारम्भ

Federation for Information and Documentation) के नाम से जाना जाता है। गया। वर्तमान में इसे इंटरनेशनल फेडरेशन फॉर इनफार्मेशन एण्ड डॉक्यूमेंटेशन (International International de documentation-FID) कर दिया गया तथा 1986 में 'इनफार्मेशन' शब्द जोड़ दिया de Documentation-II), 1937 में इसे बदलकर 'फेडरेशन इंटरनेशनल डि डॉक्यूमेंटेशन' (Federation गया। सन् 1931 में इनका नाम इंस्टीट्यूट इंटरनेशनल डि डॉक्यूमेंटेशन (Institute International Bibliographie-II) की स्थापना की गई। इसके इतिहास में इसके नाम में तीन बार परिवर्तन किया प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन किया गया, फलस्वरूप डि बिब्लियोग्राफी (Institute International de गई तथा इसका विस्तार यूरोपीय महाद्वीप तक हो गया। सन् 1889 में बैल्जियंस में बिब्लियोग्राफी पर संस्करण का प्रकाशन सन् 1876 में हुआ था। इस पद्धति की उपयोगिता जल्दी ही स्वीकार की उपयोग करने का श्रेय मैलिन ड्यूवी को जाता है। इयूवीकेव दशमलव वर्गीकरण पद्धति के प्रथम पुस्तकालय वर्गीकरण में दशमलव भिन्नात्मक (Decimal Fraction) अंकन का प्रथम बार

1.2 उद्भव एवं विकास (Origin and Development)

जाना है, साथ ही यूईसी के उद्भव व विकास को बताते हुए, उसकी संरचना को भी बताया है। वर्गीकरण से परितित करना है। इस इकाई का उद्देश्य यूईसी के विभिन्न संस्करणों पर प्रकाश बढ़तायत से उपयोग किया जा रहा है। इस इकाई के अध्ययन का उद्देश्य सार्वभौमिक दशमलव सार्वभौमिक दशमलव वर्गीकरण पद्धति को मुख्य रूप से विशिष्ट ग्रंथालयों, सूचना केन्द्रों में

1.1 उद्देश्य (Objectives)

में यूईसी अपनी उपयोगिता सिद्ध कर चुकी है। किया है। विभिन्न प्रयोगात्मक परियोजनाओं में इलेक्ट्रॉनिक सूचना को संगठित करने एवं खोजने प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय वर्गीकरण पद्धति रही है। यूईसी कमेटी ने अब एक अन्तर्राष्ट्रीय डेटाबेस तैयार किसी भी जटिल एवं मिश्रित विषय को यूईसी द्वारा वर्गीकृत किया जा सकता है। यह हमेशा एक

सम्पूर्ण संस्करण का प्रकाशन फ्रेंच भाषा में 'Manual du Repertoire Bibliographique Universel' शीर्षक के अन्तर्गत सन् 1905 में हुआ था। यूडीसी को बुखेल्स एक्सपेन्सन ऑफ़ लीवी भी कहा गया है। सन् 1927 में यूडीसी के दूसरे संस्करण पर कार्य प्रारम्भ किया गया। ऑटोलेट एण्ड फॉन्टन ने एक अन्य व्यक्ति को भी इस कार्य हेतु सम्मिलित किया उन्होंने यूडीसी के विकास में सफलतापूर्वक तीन दशकों तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस विद्वान का नाम फ्रिड्रिख डेकर हुआ था। डेकर डेडस को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की अनुसूची के विकास की जिम्मेदारी दी गई वहीं ऑटोलेट एवं फॉन्टन ने सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी की अनुसूची को विकसित किया। द्वितीय फ्रेंच भाषा में सम्पूर्ण संस्करण 1927 एवं 1933 में प्रकाशित हुआ। इसके शीर्षक में परिवर्तन कर Classification Decimale Universelle कर दिया गया। इसके तृतीय संस्करण पर 1934 में कार्य प्रारम्भ किया गया तथा यह जर्मन भाषा में 1952 में प्रकाशित हुआ जबकि इसकी अनुक्रमणिका (Volumes) में प्रकाशित हुआ था जिसमें 7 खण्डों में सारणी (Table) तथा तीन खण्डों में अनुक्रमणिका को व्यवस्थित किया गया था। इसके चतुर्थ संस्करण का कार्य अंग्रेजी भाषा में The Universal Decimal Classification' शीर्षक के अन्तर्गत 1940 में ब्रिटिश मानक संस्थान (British Standard Institute-BSI) के मार्गदर्शन में प्रारम्भ हुआ। बीएसआई अंग्रेजी संस्करण के लिए राष्ट्रीय संस्था (National Body) है। यह संस्करण 1943 में प्रकाशित हुआ।

इसका प्रथम संक्षिप्त संस्करण अंग्रेजी भाषा में 1948 में आया, द्वितीय संस्करण 1957 तथा तृतीय 1961 में प्रकाशित हुआ। इसके प्रथम संस्करण की अनुक्रमणिका में 2,000 प्रतिष्ठानों को सम्मिलित किया गया था। द्वितीय संस्करण की अनुक्रमणिका में 20,000 प्रतिष्ठानों सम्मिलित थी। तृतीय संशोधित संस्करण भी 1961 में ही प्रकाशित हुआ था। इसके पूर्ण एवं संक्षिप्त संस्करण 23 भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इसका तृभाषी (Trilingual) संक्षिप्त संस्करण 1958 में प्रकाशित हुआ था इसके दस वर्ष के पूरक (Supplement) 1968 में प्रकाशित हुए थे।

यूडीसी का नवनीतम अन्तर्राष्ट्रीय मध्यम संस्करण (IME) सन् 1993 में प्रकाशित हो चुका है। इस संस्करण में अनेक परिवर्तन किये गए हैं। इनमें से कुछ उदाहरणार्थ दिये जा रहे हैं—

Table 1e-Major Revision to the common Auxiliary of Places

(2)	Physiographic designations
(4...)	(410) United Kingdom. (417) Republic of Ireland. (430) Germany. Pakistan (549.3).
	(598) Laos. etc.
(6...)	(611) Tunisia (676.1) Uganda. (673) Angola etc.
(7)	Canada
(73)	USA
(94)	Australia

Table 1g- Common Auxiliary of Time (revised)
 Table revision included; regularisation of notation, elimination of duplication, removal of concepts that are not aspects of time.

Table 1i- Common Auxiliary of Point of View

All numbers cancelled, replaced by-02,-05 and colon combinations

Table 1k -

-02 New table : Common auxiliary of properties

-04 New table : Common auxiliary of relations, processes and operations

-05 Persons (revised, and replacing main numbers for personal characteristics through UDC)

Main Table : Some of them

004 New Class : Computer Science and Technology (replacing 681.3, new concepts added in the period 2000-2005).

005 New Class Management

2 Religion : Theology

(Completely revised)

37 Education (revised)

582 Systematic Botany (revised)

60 New Class : Biotechnology

72 Architecture (revised)

808 New class : Rhetoric

94

General History

(New divided by place Auxiliaries)

1.3 यूडीसी के विभिन्न संस्करण (Different Editions of UDC)

यूडीसी के विभिन्न संस्करण निम्नलिखित हैं—

(i) पूर्ण संस्करण (Complete Edition)

(ii) संक्षिप्त संस्करण (Abridged Edition)

(iii) मध्यम संस्करण (Medium Length Edition)

(iv) विशिष्ट भाग के संस्करण (Edition of Special Parts)

(v) अंशभाग संस्करण (Excerpt Edition); तथा

(iv) परम्परागत संस्करण (Conventional Edition)

अंकन प्रणाली वर्गीकरण पद्धति की उपयोजिता को कम कर देता है। यह वर्गीकरण पद्धति लीडरशिप

1.4.1 अंकन एवं व्यवस्थापन (Notation and Arrangement)

4, 5, 6, 7, 8 तथा 9 के अन्तर्गत व्यवस्थित किया गया है।
 दशमलव अंकन के द्वारा संभव हो सका है। इसकी मुख्य सारणियाँ (Main tables) को 0, 1, 2, 3, में उपविभाजित किया गया है तथा पुनः इन उप-विभाजनों को विभाजित किया गया है। यह ज्ञान को सौपान क्रमिक संरचना में 10 भागों में बांटा गया है, प्रत्येक वर्ग को इसके लार्किक भागों अथवा पंक्ति में ग्राहयता (Hospitality in Array) की विशेषता की ओर इंगित करती है। इसमें इतर-उतर किये नवीन विषयों को समाहित करने के लिए इसका आधार काफी बड़ा है। यह उपयोग किया गया है। इसके संख्याओं (Numbers) के कारण विद्यमान विषयों के क्रम को बिना Tables) वैल्यू-संश्लेषणात्मक की परिचायक है। इसमें मिश्रित अंकन (Mixed Notation) का जिन्हें अनुसूची कहा जाता है, में परिगणनात्मक के गुण है तथा सहायक सारणियाँ (Auxiliary Tables) वैल्यू-संश्लेषणात्मक पद्धति की विशेषताएं विद्यमान हैं। इसकी मुख्य सारणियाँ (Main tables) यूजीसी दो प्रकार के प्रलेखीय वर्गीकरण पद्धति का मिश्रण है। इसमें परिगणनात्मक एवं

1.4 संरचना (Structure)

(Interpolation) एवं बाह्यवेशन (Extrapolation) किया जा सका।
 समीक्षा जारी है ताकि नये विकास जो विषयों के अन्तर्गत हो रहे हैं, उन्हें यथास्थान पर अन्तर्वेशन विस्तार के आधार पर यूजीसी को संशोधित एवं विस्तारित किया जा रहा है। अभी भी इसकी प्रौद्योगिकी में उपविभाजन को अधिक महत्व दिया गया है। विभिन्न विषयों में निरन्तर हो रहे एवं समस्त भागों में सन्तुलन देखने को मिलता है। विषयों की प्रकृति के कारण, विज्ञान एवं यूजीसी में मानव ज्ञान (Human knowledge) की समस्त शाखाओं को स्थान दिया गया है,

विस्तार (Scope)

1. Extension of topics by more detailed subdivision
2. Minor alternations of existing subdivision notation; and
3. 'Starvation policy' introduced by Donker Duyvis.

निम्नलिखित तीन बिन्दुओं के आधार पर किया जाता है—
 यह समिति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहायता करती है। इसका संशोधन Body) है जिसे कन्द्रीय वर्गीकरण समिति (Central Classification Committee) के नाम से जानते हैं। लिए पूर्णतः उत्तरदायी है। यह हेतु में स्थित है। यूजीसी की एक समन्वयन निकाय (Coordinating एफआईडी (FID) का वर्गीकरण विभाग अर्थात् FID/CID यूजीसी के संशोधन एवं विकास के

1.	The 10 Indo-Arabic Numerals	0-9
2.	The 26 Roman Alphabets (Capital)	A-Z
3.	The 26 Roman Alphabets (Small)	a-z
4.	Punctuation Marks : Decimal point	.
	Hyphen	-
	Colon	:
	Inverted comma	" "
5.	Mathematical Symbols : Parentheses	()
	Plus	+
	Slash or stroke	/
	Square Bracket	[]
	Equal sign	=
	Zero or Naught in Parentheses	(0...)
	Equals in the Parenthesis	(=...)
	Double Zero after Decimal Point	.00

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट हो रहा है कि जब तक 611 के उपविभाजन समाप्त नहीं हो गए तब तक 611.2 का व्यवस्थापन नहीं किया गया। यह इसके सीपान क्रमिक संरचना को दर्शाता है। यूजीसी में उपयोग किए जा रहे अंकों को निम्नलिखित पांच भागों में विभाजित किया गया है—

61	उदाहरणार्थ :
611	
611.1	
611.12	
611.121	
611.121.1	
611.2	

अंक के बाद इसे (.) लिखते हैं।

यह फाइलिंग क्रम को निर्धारित करता है, किन्तु पढ़ने में आसान है, सामान्यतः प्रत्येक तीन

धारणा है जिसमें बिन्दु (.) हटा रहता है।

दशमलव पद्धति पर आधारित है। प्रत्येक संख्या दशमलव भिन्नात्मक (Decimal Fraction) की पर आधारित है तथापि इसमें मिश्रित अंकन का प्रयोग किया गया है। इसमें अंकों का व्यवस्थापन

1.4.2 चिन्ह एवं उनका महत्व (Symbols and their Significance)

इस पद्धति में उपयोग किये गए चिन्हों का पृथक-पृथक तात्पर्य है तथा ये हमेशा एक ही उद्देश्य के लिए प्रयोग किये जाते हैं। विवरण इस तालिका में दिया गया है-

क्र.सं.	चिन्ह	चिन्हों के नाम	महत्व/उपयोगिता
1.	/	Slash/Stroke	Connection of consecutive numbers
2.	+	Plus	Connection of Non-consecutive numbers
3.	:	Colon	Relation Sign
4.	[]	Square brackets	Algebraic subgrouping
5.	()	Parenthesis	Geographical Division
6.	=	Equal Sing	Language
7.	(0...)	Noughts followed by	Form
		numerals in the	
		Parenthesis	
8.	(1/9)	Arabic numbers in	Place
		Parenthesis	
9.	(=...)	Equal sign in parenthesis	Race and Nationality
10.	" ... "	Inverted Commas	Time
11.	.00	Point double naught	Point of view
12.	-	Hyphen	Special analytical no.
13.	.0	Point naught	Special analytical no.
14.	A/Z	A to Z	For Alphabetical device

अंकन की विशेषताएँ (Qualities of Notation)

यूजीसी की अंकन प्रणाली की निम्नलिखित मुख्य विशेषताएँ हैं-

- (i) क्रम में अधीनस्थता (Subordination to order)
- (ii) सरलता (Simplicity)
- (iii) संक्षिप्तता (Brevity)
- (iv) शास्त्र्यता (Hospitality)
- (v) लचीलापन (Flexibility)

1.4.3 सारणीयाँ (Tables)

यूज़ीसी में सम्पूर्ण ज्ञान जगत को 10 भागों में विभाजित किया गया है। इन 10 विभाजनों में आठव्यक्तानुसार अधिकतम 10-10 भागों में उप-विभाजित किया गया है। मुख्य सारणी में विषयों को 0-9 वर्गों (4 को छोड़कर) में व्यवस्थित किया गया है। यह वर्ग रिक्त (Vacant) है। यूज़ीसी में मुख्य वर्गों को इस प्रकार विभाजित कर व्यवस्थित (Arranged) किया गया है-

0 Generalities Science and knowledge, Organisation, Information etc.

1 Philosophy, Psychology

2 Religion, Theology

3 Social Science, Law, Government etc.

4 Vacant

5 Mathematics and Natural Sciences.

6 Applied Science, Medicine Technology

7 The Arts, Recreation, Entertainment, Sport.

8 Language, Linguistics, Literature

9 Geography, Biography, History

इन मुख्य वर्गों को पुनः 10 भागों में उपविभाजित किया गया है-

5 - Mathematics and Natural Science

50 Generalities about the Pure sciences

51 Mathematics

52 Astronomy

53 Physics

54 Chemistry, Crystallography, Mineralogical sciences

55 Earth Sciences, Geology, Meteorology etc

56 Paleontology

57 Biological sciences in general

58 Botany

59 Zoology

इन उप-विभाजनों को पुनः 10 भागों में बांटा गया है-

541 General, Theoretical and Physical Chemistry

542 Experimental and Preparative Chemistry

543 Analytical Chemistry

544 *Qualitative analysis

उपलब्ध नहीं है। इसे असम्बद्ध (Non-Consecutive) यूडीसी संख्याओं के लिए उपयोग किया जाता है जो अर्जुनी से एक साथ

(अ) जोड़ चिह्न (Addition sign) (+)

इनके माध्यम से एक से अधिक विषयों एवं पक्षों को एक साथ जोड़कर वर्गीकृत कर सकते हैं। प्रत्येक को उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है—

(Auxiliaries of Addition, Extension and Relations)

1. जोड़ने, विस्तारित करने तथा संबंध दर्शाने सहायक सारणीयाँ

यूडीसी में दो प्रकार की सहायक सारणीयाँ का उपयोग किया गया है— सामान्य या सर्वमान्य तथा विशिष्ट/सामान्य सहायक सारणीयाँ का उपयोग समस्त अर्जुनी में आवश्यकतानुसार कही भी किया जा सकता है जबकि विशिष्ट सहायक सारणीयाँ को अर्जुनी के विशिष्ट भाग में किया जाता है (जिनके लिए निश्चित किये गये होते हैं या निर्दिष्ट किया गया होता है) सामान्य सहायक सारणीयाँ को भी दो भागों में विभाजित किया गया है— एक तो वे जो दो विषयों के विस्तार, सम्बन्ध एवं जोड़ने (संयुक्त) की स्थिति को बताते हैं, तथा दूसरे वे जो सहायक सारणीयाँ के विभिन्न सारणीयाँ के अन्तर्गत अधीनस्थ अवधारणा को एक साथ प्रस्तुत करते हैं।

1.4.4 सहायक सारणीयाँ (Auxiliary Tables)

- 546.9 Elements of the Fifth group generally
- 546.8 Metals of the Fourth group, etc.
- 546.7 Metals of the Sixth, Seventh, Eighth group
- 546.6 Metals of the Third group
- 546.5 -
- 546.4 Metals of the second group. Alkali metals
- 546.3 Metals in general
- 546.2 Non - metals, metalloids of Sixth and other group
- 546.1 Non - metals, metalloids in general

इन वर्गों को पुनः कड़े भागों में विभाजित किया गया है—

- 549 Mineralogy
- 548 General Crystallography
- 547 Organic Chemistry
- 546 Inorganic Chemistry
- 545 * Quantitative analysis

है। ये विषय एक जैसी अवधारणा से सम्बद्ध होते हैं लेकिन अनुसूची में इन्हें कभी भी एक साथ निर्धारित नहीं किया गया है।

उदाहरण :

Chemistry and Chemical Technology	54+66
Mining and Metallurgy	622+669
India and China	(540) + (51)

(ब) विस्तार चिन्ह (Extension Sign) (//)

इसका उपयोग संयुक्त सम्बद्ध अंकन तत्वों (Notational Elements) के लिये किया जाता है। अर्थात् यह या तो दो सम्बद्ध संख्याओं (Consecutive Numbers) या फिर एक ही श्रृंखला (Series) के प्रथम एवं अन्तिम सम्बद्ध संख्याओं (Consecutive UDC no.) को एक साथ प्रदर्शित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

उदाहरण :

Science and Technology	5 / 6
Christian Religion	22 / 28
Communication and Transport	383 / 388
From 1992 to 1998	" 1992 / 1998 "

(घ) सम्बन्ध चिन्ह (Relation Sign) (:)

इस चिन्ह का महत्व सर्वाधिक है। वास्तविक रूप में इसका उपयोग जटिल विषय (Complex Subject) को निर्दिष्ट करने हेतु किया जाता था। लेकिन अब इसे दो या अधिक सूचीसी संख्याओं को जोड़ने के लिए उपयोग किया जाता है। इसके आधार पर निर्मित वर्गीक पुस्तकालय एवं पाठकों की आवश्यकता को देखते हुए बदला (Reverse) जा सकता है।

उदाहरण :

Religion and Arts	2 : 7
Presidential Election	324 : 328.1 32.7
India (in relation to) China	(540 : 51)
Reference Services in Univer	027.7 : 025.5
Sity libraries	

2. सर्वमान्य सहायक सारणियाँ (Common Auxiliaries)

सर्वमान्य सहायक सारणियाँ अनुसूची में कहीं पर भी प्रयुक्त हो सकती हैं। विभिन्न सर्वमान्य सहायक सारणियों को उनके संयोजी चिन्हों के साथ बताया जा रहा है—

- (अ) भाषा सहायक सारणी (Auxiliary of Language) = ...
- | | | |
|-----|--|---------|
| (a) | Common Auxiliaries of Language | = |
| (b) | Common Auxiliaries of Form | (0...) |
| (c) | Common Auxiliaries of Place | (1/9) |
| (d) | Common Auxiliaries of Race and Nationality | (=...) |
| (e) | Common Auxiliaries of Time | " ... " |
| (f) | Common Auxiliaries of Point of View | .00 |

इस सारणी का उपयोग भाषा को बताने के लिए किया जाता है। इसका संयोजी चिन्ह बराबर चिन्ह = है। जब सहायक सारणी के रूप में भाषा अंक जोड़ा जाता है तब अंक 4 को हटाते हुए = चिन्ह का उपयोग किया जाता है। इसके बाद का अंक उस भाषा को संकेत करता है जिस भाषा में वह प्रलेख लिखा गया है। उदाहरण के लिए यदि कोई पुस्तक अंग्रेजी भाषा में लिखी गई है तो उसके लिए =20 का उपयोग होगा जबकि अंग्रेजी भाषा का अंकन 420 है।

उदाहरण :

Chemistry books written in German Language 54=30
 Handbook of Economics in Russian Lang. 33(021) = 82
 Physics book in English Language 53=20

नोट : दूसरे उदाहरण में (021) हैण्डबुक के लिए उपयोग किया गया है।

(1) विशिष्ट कार्य का अनुवाद (Translation of Specific Works)

जब किसी पुस्तक का अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में किया जाता है तब इसका वर्गीकृत इस प्रकार निर्मित होगा—

उदाहरण :

Economic documents translated from German 33 / 03 = 30
 Chemistry documents translated from English to Hindi 54 / 03 = 20 = 914.3

- (1) Place in general
 (-0) Zones. Areas with defined limits
 (-1) Orientation Point of the compass
 (-2/-5) Political, Administrative units, Areas, etc.
 (-6) Grouping of Independent States
 (-7) Spheres of Private and Public enterprise
 (-8) Source of Destination
 (2) Physiographic Division
 (3) The Ancient World
 (4/9) The Modern World

गया है।

यूरोपीय संस्थान संस्कृति सहायक सारणियों को इस प्रकार विभाजित एवं व्यवस्थित किया

(स) स्थान सहायक सारणी (Common Auxiliary of Place) (1/9)

- Botany Guidebooks
 - Report on Games
 - Reference Book on Domestic Science
 - Library and Inf. Sc. Periodical
 58 (028)
 796 (047)
 64 (03)
 02 (05)

उदाहरण :

रूप (Form) का तात्पर्य उस प्रलेख की पाठ्य-सामग्री किस दृष्टि से लिखी एवं प्रस्तुत की गई। अर्थात् उस प्रलेख से किस प्रकार से सूचना को व्यवस्थित किया गया है तथा किन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम है। जैसे शब्दकोश से शब्दों का अर्थ ज्ञात होता है। वानामय सूची से सूची विशेष की जानकारी प्राप्त होती है आदि।

(ब) रूप सहायक सारणी (Common Auxiliary of Form) (0...)

- Encyclopaedia of Library Science (Bilingual -French and Spanish)
 Handbook of Botany in English, German and Russian Language
 02 (03) = 00 = 40 = 60
 58 (021) = 00 = 20 = 30

उदाहरण :

छोड़ दिया जाता है। जैसे-

यदि पुस्तक दो भाषाओं में लिखी गई हो तो दोनों भाषाओं का अंक लिखा जाएगा। यदि दो से अधिक भाषाओं का उल्लेख हो तो शीर्षक दी गयी दो भाषाओं की बाद वाली भाषाओं को

(2) बहुभाषीय कार्य (Multilingual work)

1980s Represented as	"198"
10 August, 2008 as	"2008.08.10"
65 BC as	"-0065"
1970 to 1990 as	"1970 / 1990"
21st Century as	"20"
19th to 20th Century as	"18/19"

प्रयुक्त किया जाता है।

Decade, Year, Day, Month, Week and Date etc. समय को इन्वर्ट कोमा "कुक" के अंतर्गत इस सारणी में समय को बताने के लिए विरुद्ध प्राधान किया गया है। जैसे Century,

(घ) समय सहायक सारणी (Common Auxiliaries of Time)

- African Negroes (= 96)
- Birth Customs of Jews (392.12 (=924))
- Population Statistics of Desert dwellers in India (312 (540) (=1.252))
- Civil Disobedience of Namibians (323.25 (=1.688))

उदाहरण :

इस सारणी में जाति एवं राष्ट्रियता से सम्बन्धित यूजीसी संख्याएं दी गई हैं। यह सारणी स्थान एवं भाषा का मिश्रित रूप है। इन्हीं के आधार पर अन्य आवश्यक अंकों को बनाया जाता है। इसे लघु कोष्ठक में बराबर चिन्ह के साथ (=..) अंकित किया जाता है।

(Common Auxiliaries of Race & Nationality) (=...)

(द) जाति एवं राष्ट्रियता सम्बन्धी सहायक सारणी

- Indian Fancy Dress (688.75 (540))
- Social Security in Sweden (368.4 (485))
- Higher Education in Canada (378 (71))
- Cultural relation between India and France (008 (540) : 44)
- India : its Railway System (540) 385

उदाहरण :

स्थान सारणी का उपयोग लघु कोष्ठक () में किया जाता है। जो विभाजन दाइकन (-) के साथ दिये गए हैं इनका उपयोग दाइकन के साथ होगा जैसे Rural India (540-202)। एक से अधिक स्थानों को शीर्षक की आवश्यकता नसारे लस (+) एवं कोलन (:) के साथ प्रयुक्त होंगे।

Special Auxi.	Indicatar digit	Range of digits
Hyphen	-	-00/-009,-01-09,-1/-9
Point Naught	.0	.01/.09
Apostrophe	,	

सहायक सारणीयानि निम्नलिखित हैं—

विशेष सहायक सारणी वे हैं जो एक निश्चित एवं सीमित विषय क्षेत्र के साथ प्रयुक्त होती हैं। इस मुख्य सारणी के सम्बन्धित अनुभाग में सूचीबद्ध किया गया है। सूचीबद्ध में प्रयुक्त विशेष

विशेष सहायक सारणी (Special Auxiliaries)

631.001.5	- Research in Agriculture
339.564:629.114.002.645	- Export of Deluxe Model Motor Vehicle
669.14.0071	- Top Management in Steel Industry

उदाहरण :

.009 Social and Ethical Point of view, etc.

.

.004 Use, Operation care

.002 Production and Technique Problem

जैसे : .001 Programme, Research, Development

के अन्तर्गत सूचीबद्ध किया गया है।

कोई विशेष दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, तब इस सारणी का उपयोग किया जाता है। इस .00 जब किसी विषय का अध्ययन किसी विशेष दृष्टिकोण से किया जाता है या कोई विषय

(र) दृष्टिकोण सहायक सारणीयानि (Common Auxiliaries of Point of View)

325.86 : 06.078 (540)	- Indian Independence day celebration on 15th August 2008
"2008.08.15"	- Development of higher education in India from 1947 to 2008
378 (540) "1947/2008"	- History of India during 3rd century AD
954 "+0003"	

उदाहरण :

उदाहरण :

-	Copper Sheets	669.3-41
-	Chemistry of Salt	546.33*13
-	Prevention of Eye disease	617.7-084
-	Philosophy of Music	78.01
-	Finishing process of Plastic Leather	675.924.029

1.4.5 उद्धरण क्रम (Citation Order)

यूडीसी में इसके परिगणनात्मक सिद्धान्तों के कारण अनेक विधियाँ, चिन्हों एवं सहायक सारणियों का प्राधान्य किया गया है। अनेक प्राधान्यों के होने से यह समस्या सामने आई कि इनके इन्टीग्रेटेड अंकों के व्यवस्थापन का क्या आधार होना चाहिए। यहाँ पर यह जान लेना आवश्यक है कि इन्हें कैसे क्रमबद्ध किया जा सकता है। जब अंकन के पक्ष दिये होते हैं तथा इन्हें उसी क्रम में व्यवस्थित किया जाता है इसे पक्ष परिपूर्ण (Facet Formula) कहते हैं। यद्यपि इसे ही उद्धरण क्रम कहा जाता है। यूडीसी में वर्गीक के उद्धरण क्रम को उल्टे क्रम के सिद्धांत (Principle of Inversion) के अनुसार निश्चित किया जाता है। इसका तात्पर्य वर्गीक में तत्वों के क्रम के ठीक उल्टे क्रम से है, अर्थात् अनुसूची में सूचीबद्ध सहायक सारणियों के क्रमानुसार। अनुसूची में विभिन्न सहायक सारणियों का क्रम इस प्रकार है—

- (i) = Language
- (ii) (0...) Form
- (iii) (1/9) Place
- (iv) (=...) Nationality
- (v) "... Time
- (vi) + Extension
- (vii) Simple Number
- (viii) : Relations
- (ix) :: Order Fixing
- (x) .00 Point of view
- (xi) -0
- (xii) - 1/-9
- (xiii) .0
- (xiv) .1/-9
- (xv) ,

उदाहरण :

British Industries Directory

यहाँ पर तीन पक्ष - स्थान, विषय एवं रूप दिये गए हैं अर्थात्

स्थान (410) Great Britain

विषय 6 Industry

रूप - (058) Directory

इस शीर्षक का वर्गीक 6 (410) (058) होगा।

अतः यूडीसी में मुख्य वर्ग के साथ विभिन्न सारणियाँ एवं उनके विभाजन का उद्घरण क्रम इस प्रकार है-

Main Number,	0/9	Special auxiliaries,	.01/09 and -0/-9	Common Auxiliaries	Point of view.00,
Place (1/9),	Time "..."	Form (0..), Language =			
Point Naught	.0				.01/09

1.4.6 फाइलिंग क्रम (Filing Order)

यूडीसी में विभिन्न विषयों सम्बन्ध, विस्तार, जोड़ने, सर्वमान्य एवं विशिष्ट सहायक सारणियाँ को निर्दिष्ट करने के लिए अनेक संयोजी चिन्हों का प्रावधान है। संयुक्त यूडीसी संख्या को सूचीबद्ध या फाइलिंग में आसानी हो इसके लिए आवश्यक है कि संयोजी चिन्हों का क्रम निम्नलिखित हो। यूडीसी में निम्नलिखित क्रम को संरक्षित किया गया है-

+	677+687	Textile and Clothing industry
/	677/679	Textile, Rubber and Plastic, Processable material Industries

Simple number

: and	677 : 382.6	Textile Exports
[]	677 [37]	Textile Industry, Instruction and Training
=	677=20	Textile Industry (Documents in English)
(0)	677 (058)	Directory of Textile Industries
(1/9)	677 (73)	Textile Industry in America
(=...)	677 (=1.494)	Textile Industry for Swiss Persons
"..."	677 "199"	Textile Industry in 1990's
A/Z	677 NTC	Textile Industries of National Textile Corporation
.00	677.007	Manpower in Textile Industries
-1/-9	677-78	Textile Industry - protection and safety
.0	677.03	Textile Industry - processing
.1/8	677.4	Textile - Man made fibers
'0/9	547.29'26	Acid Alcohol esters

कार्डिंग क्रम पत्रक सूची (Card Catalogue) तथा निधानी व्यवस्थापन (Shelf Arrangement) दोनों के लिए आवश्यक है। वागमय सूची तथा विषय अनुक्रमिका के लिए भी कार्डिंग क्रम अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

1.4.7 समानान्तर विभाजन (Parallel Division)

इस पद्धति (IME) में अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रक्रिया समानान्तर विधि की शुरुआत हुई जिसे संकेत/चिन्ह द्वारा निर्दिष्ट किया गया है। इस विधि का परिणाम यह हुआ कि उसी उद्देश्य के लिए एक अंकन का प्रयोग एक से अधिक स्थानों पर होने लगा। इसे निम्नलिखित उदाहरण से समझा जा सकता है।

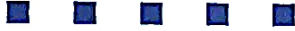
उदाहरण :

- 294.11 Vedism
- 294/11 ≡ 291
- 294.112.14 Gods : Indra, Agni (from 291.214)
- 294.116.1 Priests. Brahmins (from 291.61)

जिन अंकों में समानान्तर विभाजन का उपयोग हो रहा है। उनकी कोई सीमा नहीं है। वे मुख्य संख्या (Main number) हो सकते हैं; सहायक सारणियों के विभाजन हो सकते हैं तथा विविध सारणियों आदि के विभाजन हो सकते हैं। यह अनेक स्मरणशील विधियों में से एक है जो यूडीसी में उपयोग होती है। इससे दो उद्देश्यों की पूर्ति होती है— पहला यह अंकों की बचत तथा पृथक उपविभाजन प्रक्रिया को खत्म करता है तथा दूसरा यही स्मरणशीलता विधि (Mnemonic device) के रूप में कार्य करता है।

1.4.8 यूडीसी एवं कम्प्यूटर (UDC and Computers)

यूडीसी कम्प्यूटर के साथ उच्च स्तरीय अक्षा कार्य करती है अर्थात् कम्प्यूटर का अनुप्रयोग इसके साथ सफलता पूर्वक किया जा रहा है। यह पूर्व से ही स्वचालित छंटनी विधि (Automatic Sorting Device) के रूप में कार्य कर रही है। यूडीसी में प्रयुक्त संकेत/चिन्ह इसमें किसी भी संयुक्त विषय या संकेतों के संयोजन (Combination) ही इसकी खोज प्रक्रिया को सरल तथा सम्भव बनाते हैं जिससे स्पष्ट विषय खोज की प्राप्ति होती है। यूडीसी में संख्यात्मक कोड (Numerical Code) के संयोजन तथा प्राकृतिक भाषा विवरण (Natural Language Description), इसके उपकरणों को व्यवस्थित रूप में बनाए रखने (Maintain) जैसे, सूची (Catalogues) एथॉरिटी फाइल्स एवं अनुक्रमिका (Indexes) में यह इसे अनुकूल बनाती है। यूडीसी सूचना के रखवालों (Keepers) तथा उपयोगकर्तियों दोनों को बेहतर सेवा प्रदान कर रही है।



1. यूजीसी का उद्भव एवं विकास की चर्चा करें।
2. यूजीसी के विभिन्न संस्करणों का वर्णन कीजिए।
3. सहायक सारणियों को उदाहरण सहित समझाइये।
4. इसके अंकन एवं उनके व्यवस्थापन की व्याख्या कीजिए।

1.6 स्व-जाँच अभ्यास (Self check Exercise)

इस इकाई में सांख्यिक दशमलव वर्गीकरण के उद्भव व विकास तथा संस्करणों की चर्चा की गई है। यह पद्धति अपनी विशेषताओं एवं अंकन के कारण उपयोगकर्ताओं, पुस्तकालयों की आवश्यकताओं में हो रही निरंतर वृद्धि को पूर्ण करने में सक्षम है। यूजीसी इलेक्ट्रॉनिक रूप में भी उपलब्ध है। इसका लाइसेंस वीएसआई से ऑन लाइन खरीदा जा सकता है। यूजीसी का इलेक्ट्रॉनिक वर्जन सीडी में भी उपलब्ध है, जो स्थानिक है, जो स्थानिक एवं चोक भाषा में प्रकाशित हुआ है।

1.5 सारांश (Let us Sum up)

इस वर्गीकरण पद्धति के प्रणेता डॉ. एस.आर. रंगनाथन थे। आप मूलतः गणित के प्राध्यापक थे। सन् 1924 में आप मद्रास विश्वविद्यालय पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त किये गए, इसी वर्ष आपके लन्दन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लैंग्वेजियनशिप में पुस्तकालय विज्ञान का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। आपने वहाँ के पुस्तकालयों में प्रयुक्त की जा रही वर्गीकरण पद्धति का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि वे पद्धतियाँ जटिल एवं संयुक्त विषयों को वर्गीकृत करने में सक्षम नहीं हैं। इसके पश्चात् ही आपने एक ऐसी पद्धति का निर्माण करने का विचार किया जो विश्वविद्यालय लेखीली ही तथा शोध में उत्पन्न होने वाले विषयों एवं एकलों को समाहित करने एवं समन्वित प्रलेखों को वर्गीकृत करने में सक्षम हो।

2.0 विषय प्रवेश (Introduction)

- 2.5 स्व-जाँच अभ्यास (Self-check Exercise)
- 2.4 सारांश (Let us Sum up)
- 2.3.5 पक्ष अनुक्रम के सिद्धान्त (Principles of Facet Sequence)
- 2.3.4 सहायक अनुक्रम के सिद्धान्त (Principles of Helpful Sequence)
- 2.3.3.4 ग्रंथ वर्गीकरण के उपसर्ग (Canons for Book Classification)
- 2.3.3.3 अंकन स्तर के कार्यों के उपसर्ग (Canons for works in the Notational Plane)
- 2.3.3.2 शब्दिक स्तर के कार्यों के उपसर्ग (Canons for works in the Verbal Plane)
- 2.3.3.1 वैचारिक स्तर के उपसर्ग (Canons of works in the Idea Plane)
- 2.3.3 वर्गीकरण के उपसर्ग (Canons of Classification)
- 2.3.2 मूलभूत नियम (Basic Laws)
- 2.3.1 पूँज मूलभूत श्रेणियाँ (FFC)
- (Basic Principles of Colon Classification)
- 2.3 द्विविन्दु वर्गीकरण के मौलिक सिद्धान्त
- 2.2 उद्भव (Origin)
- 2.1 उद्देश्य (Objectives)
- 2.0 विषय प्रवेश (Introduction)

द्विविन्दु वर्गीकरण
(COLON CLASSIFICATION)



इस पद्धति को प्रकाशित करने से पूर्व रंगनाथन ने मद्रास विश्वविद्यालय पुस्तकालय में प्रयोग किया तथा लगभग 30,000 पुस्तकों को वर्गीकृत किया। इसके अब तक सात संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं— प्रथम (1933), द्वितीय (1939), तृतीय (1950), चतुर्थ (1952), पांचवा (1957), छठा (1960), छठा संशोधित (1963) तथा सातवां संस्करण (1987) में प्रकाशित हुआ। इस पद्धति के अन्तर्गत दिये गए प्राधान्यों अर्थात् इसकी विशेषताओं के प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं—

2.3 द्विबिन्दु वर्गीकरण के मौलिक सिद्धान्त (Basic Principles of Colon Classification)

इस पद्धति की संरचना पञ्चात्मक होने के कारण यह ज्ञान जगत की चूनीकी का सामना करने वाली प्रमुख पद्धतियों में से एक है। यही कारण है कि इसे 1975 में लोरिंग (इंग्लैण्ड) में आयोजित International Study Conference on Classification में आधुनिक वर्गीकरण के आधार के रूप में स्वीकार किया गया था।

1. वैशेषी संश्लेषणात्मक पद्धति (Analytico-Synthetic Scheme)
2. पाँच मूलभूत श्रेणियाँ (Five Fundamental Categories)
3. मिश्रित अंकन (Mixed notation)
4. वैचारिक पद्धतियाँ एवं विशिष्ट वर्ग (Systems & Specials)
5. विधियाँ (Devices)
6. स्मृति सहायक अंकन (Mnemonics)
7. दशा सम्बन्ध (Phase Relations)
8. ग्रंथांक एवं संग्रहांक (Book number & Collection No.)
9. सर्वमान्य एकल (Common Isolates)
10. अभिधारणाओं एवं सिद्धान्तों पर आधारित (Based on Postulates and Principles)

इस पद्धति को प्रकाशित करने से पूर्व रंगनाथन ने मद्रास विश्वविद्यालय पुस्तकालय में प्रयोग किया तथा लगभग 30,000 पुस्तकों को वर्गीकृत किया। इसके अब तक सात संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं— प्रथम (1933), द्वितीय (1939), तृतीय (1950), चतुर्थ (1952), पांचवा (1957), छठा (1960), छठा संशोधित (1963) तथा सातवां संस्करण (1987) में प्रकाशित हुआ। इस पद्धति के अन्तर्गत दिये गए प्राधान्यों अर्थात् इसकी विशेषताओं के प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं—

(PMEST) में श्रेणीबद्ध किया गया है। प्रत्येक पक्ष की पंक्तियाँ एवं शृंखलाओं को समकक्ष एवं अधीनस्थ वर्ग के अनुसार व्यवस्थित किया गया है। पांच मूलभूत श्रेणियाँ निम्नलिखित हैं—

2.3.1 पाँच मूलभूत श्रेणियाँ (Five Fundamental Categories)

पांच मूलभूत श्रेणियाँ ज्ञान वर्गीकरण के लिए एक उपयुगी अभिवारणा सिद्ध हुई है। डॉ. रंजनाथन ने द्विचिन्तन परीक्षण पद्धति में सन् 1944 में इस अवधारणा को सुदृढ़ आधार प्रदान कर इन्हें ज्ञान के सभी क्षेत्रों में लागू किया। ये मूलभूत श्रेणियाँ निम्नलिखित हैं—

क्र. मूलभूत श्रेणी प्रतीक चिन्ह योजक चिन्ह

1.	व्यक्तित्व (Personality)	P	.
2.	पदार्थ (Matter)	M	:
3.	ऊर्जा (Energy)	E	:
4.	स्थान (Space)	S	.
5.	काल (Time)	T	.

1. **व्यक्तित्व (Personality) :** व्यक्तित्व श्रेणी उस मूलभूत विशेषताओं की अभिव्यक्ति होती है, जो उसके सारभूमि को दर्शाती है। इस श्रेणी को अकथनीय अथवा अचरणीय (Undefined) कहा गया है। यही कारण है कि इसे पहचानने के लिए अवशेष विधि (Method Residue) का प्रयोग करना पड़ता है अर्थात् [P][S][E] तथा [M] पक्षों को निकालने के बाद जो शेष रह जाता है, वही व्यक्तित्व श्रेणी होती है।

उदाहरण : Library Science में Library, Medicine में Human body organ, Animal husbandary में Animal व्यक्तित्व श्रेणी है।

2. **पदार्थ (Matter) -** इस श्रेणी के अन्तर्गत किसी वस्तु आदि को रखा गया है। जैसे— Steel, Rubber, Reading material in library Science, Cotton etc.

3. **ऊर्जा (Energy) -** ऊर्जा श्रेणी को विषय के कार्यकलापों, गतिविधियों, प्रक्रियाओं आदि से पहचानते हैं अर्थात् ऊर्जा से तात्पर्य विषय के क्रियाकलापों, गतिविधियों, प्रक्रियाओं, समस्याओं तथा समस्या के समाधानों इत्यादि से है। जैसे - Cataloguing in Lib. Sc., Treatment in Medicine, Analysis in Chemistry, Functions in History etc.

4. **स्थान (Space) -** इस श्रेणी का प्रयोग पृथ्वी की सतह पर स्थित सभी भू-भागों तथा जल और जल से घिरे भू-भागों के लिए हुआ है। इस श्रेणी का निर्धारण राजनैतिक, प्रशासनिक तथा प्राकृतिक विशेषताओं के अनुसार किया गया है। जैसे - World, Asia, India, Mountain,

यह नियम बताता है कि दो सत्ताओं/स्थितियों में आपस में सममिति होनी चाहिए। जिसकी

3. सममिति का नियम (Law of Symmetry) :

संबोधक करते समय ध्यान में रखना चाहिए। पहले रखना चाहिए। इसे किसी भी विषय के पक्ष, शृंखला एवं पक्षों को निर्धारित एवं दृष्टिकोण को नहीं अपनाया चाहिए अर्थात् जिस पहले रखने की आवश्यकता हो उसे ही यह नियम निर्देश देता है कि दो या दो से अधिक वर्गों/संख्या या पक्षों के होने पर पक्षगत

2. निष्पक्षता का नियम (Law of Impartiality) :

सकती है। संज्ञाव दिया है कि द्विबिन्दु वर्गीकरण को इन नियमों के दृष्टिकोण से स्कैटनी की जा साथ संयुक्त कर एक कानून प्रलेख के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। डॉ. रंगनाथन उपयोग में लाए जाते हैं। उपर्युक्त, सिद्धान्त, अधिधारणा एवं वर्गीकरण के नियमों को एक संबोधक किया गया है। ये सिद्धान्त कानून पाठ (Legal text) को अभिव्यक्त करने हेतु डॉ. रंगनाथन ने अभिव्यक्ति से संबंधित 1,008 सिद्धान्तों को बताया है जिन्हें न्याय कोश में

1. अभिव्यक्ति का नियम (Law of Interpretation) :

डॉ. एस.आर. रंगनाथन ने निम्नलिखित 6 मूलभूत सिद्धान्तों को निर्मित किया है—

2.3.2 मूलभूत नियम (Basic Laws) :

हूआ है।

इसी प्रकार मुख्य वर्ग 'O' साहित्य में P_1, P_2, P_3, P_4 अर्थात् पक्ष का स्तर के रूप में प्रयोग उदाहरण : LP : E 2P : 2E 3P इत्सं 'P' और 'E' पक्ष का प्रयोग आवर्तन के रूप में हुआ है।

की आर्गुलि लगातार कम में होती है।

सकते। स्तर में भी एक से अधिक बार किसी पक्ष का प्रयोग होता है लेकिन इत्सं उस पक्ष किसी पक्ष का एक से अधिक बार प्रयोग होना। आवर्तन लगातार कम में कमी नहीं हो आवर्तन एवं स्तर (Rounds and Levels) - आवर्तन का अर्थ है किसी विषय में उसके

आदि के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है।

में सभी मुख्य वर्गों के लिये किया जा सकता है। समय/काल को शताब्दी, दशक, वर्ष लिए कालक्रम सारणी 3 पृष्ठ 27 पर दी गयी है। जिसका प्रयोग सामान्य अनुसूची के रूप कां (Time) - इस श्रेणी को पहचानना आसान है। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में इसके

River, Rural, North etc.

वर्गीकरण के सैद्धांतिक आधार को सुदृढ़ बनाने में रंगनाथन का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं

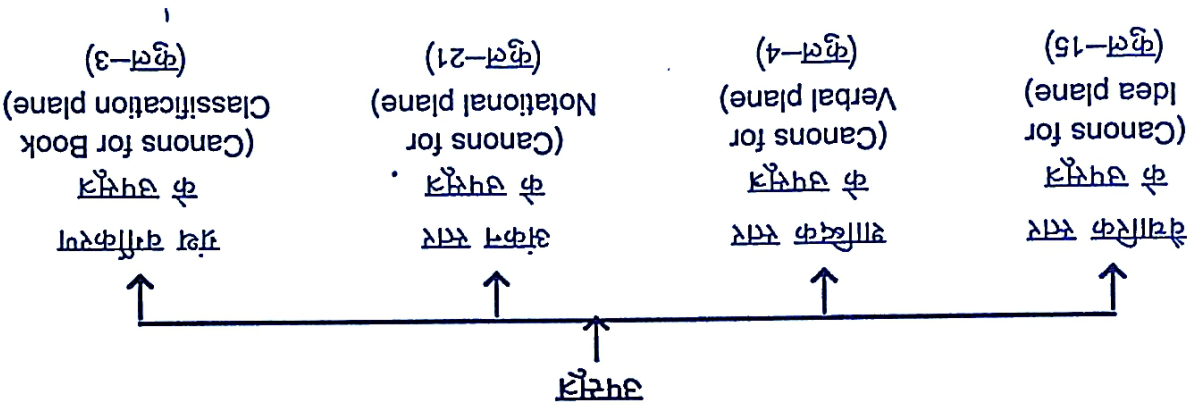
2.3. वर्गीकरण के उपसर्ग (Canons of Classification)

5. पाठकों को सभी पाठ्य-सामग्री की ओर इंगित करना चाहिए आदि।
 4. जिनका प्रयोग नगण्य है उन्हें अलग अवस्थित करके दो कैटलॉग की व्यवस्था की जानी चाहिए।
 3. प्रारम्भ में ये गति तेज होगी धीरे-धीरे ये कम होने लगनी तत्पश्चात् पुराने बचे संग्रह में नयी पद्धति का अनुप्रयोग करना चाहिए।
 2. पुस्तकालय में पाठकों द्वारा वापस की गयी पुस्तकों को भी नयी पद्धति से वर्गीकरण या सूचीकरण करना चाहिए।
 1. नयी क्रय की गयी पुस्तकों को नए पद्धति से सूचीकरण या वर्गीकरण करना चाहिए।
6. **रसाकषण का नियम (Law of Osmosis) :**
- यदि किसी पुस्तकालय में वर्गीकरण पद्धति एवं / या सूचीकरण पद्धति को बदलना है अर्थात् नई पद्धति या संस्करण को अपनाना हो तो इस नियम का अनुपालन करना चाहिए ताकि पुस्तकालय संवाहण बाधित न होने पाए-
5. **स्थानीय भिन्नता का नियम (Law of Local Variations) :**
- इस नियम के अनुसार किसी भी पुस्तकालय में उपयोगकर्ताओं की सुगम पहुँच हो अर्थात् सूचना-सामग्री तक आसानी से पहुँच सके, के लिए स्थानीय भिन्नता का प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार विभिन्न वर्गीकरण प्रणाली में भी कहीं न कहीं उस देश से सम्बन्धित स्थानीय भिन्नता का प्रभाव देखने को मिलता है।
4. **भित्तव्यता का नियम (Law of Parsimony) :**
- यह नियम लिखने तथा बोलने दोनों में ही भित्तव्यता की वकालत करता है। इसके अनुसार वर्गीकरण छोट्टा निमित्त किया जाना चाहिए। सीसी के निमित्त अंकन के कारण वर्गीकरण छोट्टा निमित्त होता है। इसी प्रकार इसमें प्रयुक्त विभिन्न विधियों के कारण अनुसूची का आकार सीमित करने में मदद मिली है। इसका अनुप्रयोग बहुत ही सावधानी से करना चाहिए। इसे विभिन्न परिघटना के वैकल्पिक अवस्था पर ही प्रयुक्त किया जाना चाहिए।
- आर्डिनल वैल्यू (ordinal value) अधिक उसे पहले तथा कम वाले को अंकों को बाद में रखना चाहिए। सीसी में रोमन बड़े अक्षरों की आर्डिनल वैल्यू अधिक है तथा छोटे रोमन अक्षरों छोटी-अरेबिक न्यूमरल्स से भी कम है।

1. विशेषताओं के लिए उपसर्ज
2. विशेषताओं के उत्तरांतर प्रयोग के उपसर्ज
3. पंक्ति के उपसर्ज
4. शृंखला के उपसर्ज
5. संसर्ग अनुक्रम के उपसर्ज

किसी भी वर्गीकरण पद्धति के निर्माण से पूर्व उसके मुख्य वर्गों के विभाजन हेतु विषयों की मुख्य विशेषताओं का निर्धारण किया जाता है। इन वर्गों के विभाजन हेतु वर्गीकरण पद्धति में मुख्य रूप से पांच विचारों को सम्मिलित किया जाता है। ये विचार निम्नलिखित हैं—

2.3.3.1 वैचारिक स्तर के उपसर्ज (Canons of works in the Idea Plane) :



उपसर्जों की संख्या 43 हो गयी है। इन्हें इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है—
 वल्लासीकिकेशन' में इन उपसर्जों की व्याख्या की गई है। इसके तृतीय संस्करण (1967) में इन द्वारा प्रतिपादित सैद्धांतिक पक्षों का महत्त्व प्रभाव पड़ा। रंगनाथन कृत 'प्रोलोगिम्ना टू लाइब्रेरी नामक ग्रन्थ की रचना की थी। रंगनाथन, संयुक्त के शिक्षण से यही कारण था कि रंगनाथ पर संयुक्त (Canons) सर्वप्रथम डब्ल्यू सीवी संयुक्त ने किया था। उन्होंने 1915 में 'केनन्स ऑफ वल्लासीकिकेशन' शब्द का प्रयोग किया है उसके लिए हिंदी शब्द 'उपसर्ज' अधिक प्रासंगिक है। इस शब्द का प्रयोग है जैसे— अतिनियम, मापदण्ड, कानून, अधिमत तथा उपसर्ज आदि। रंगनाथन ने जिन अर्थों में इस उपसर्ज 'केनन' को विभिन्न शब्दकोशों में इसके लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया गया

उपसर्ज : तात्पर्य (Meaning) :

किसी भी वर्गीकरण प्रणाली का मूल्यांकन किया जा सकता है।
 नियमों, सिद्धान्तों (Principles) एवं उपसर्ज (Conons) का निर्माण किया। इन उपसर्जों के आधार पर पर अधिक बल दिया। वर्गीकरण के सैद्धांतिक विवेचना एवं स्पष्टीकरण के लिए आपने विभिन्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इन्होंने वर्गीकरण प्रणाली के निर्माण के साथ-साथ सैद्धांतिक स्पष्टीकरण

1. विशेषताओं के उपसर्ग (Canons of Characteristics) : इस उपसर्ग के अनुसार वर्गीकरण करते समय प्रयोग में लायी जाने वाली विशेषता या विशेषताओं के समूह निम्न लिखित चार उपसर्गों के अन्तर्गत ही होना चाहिए—

1.1 विभजन का उपसर्ग (Canons of Differentiation) : इस उपसर्ग के अनुसार वर्गीकरण हेतु ऐसी विशेषताओं का उपयोग किया जाना चाहिए जो कम से कम दो वर्गों में विभाजित करने की क्षमता रखती हो तथा वर्गीकरण सम्भव हो सके।

उदाहरण : यदि मनुष्यों का वर्गीकरण करना चाहे तो इनकी ऊँचाई को तो वर्गीकरण का आधार बनाया जा सकता है लेकिन इनकी शक्ति को आधार बनाया जाय तो एक वर्ग में दो चूहरे आने की सम्भावना नहीं है।

1.2 सम्बन्धता का उपसर्ग (Canons of Relevance) : इस उपसर्ग के अनुसार वर्गीकरण हेतु जिस विशेषता का प्रयोग किया जा रहा है वह वर्गीकरण के उद्देश्य को अन्तर्कूल होनी चाहिए या अन्य शब्दों में विशेषताओं का वर्गीकरण से सीधा सम्बन्ध होना चाहिए।

उदाहरण : शर्शों के समूह को किसी जलदसाज की आवश्यकता के अन्तर्गत यदि वर्गीकरण करना है तो 'सिलाई का धागा', 'सिलाई का तश्तका' प्रयोग में लायी जाने वाली सामग्री सम्बन्धित विशेषताएं हो सकती हैं। यदि इसी समूह को किसी प्रिंटर की आवश्यकता के अन्तर्कूल वर्गीकृत करना है तो मुद्रण कला, कानून तथा हाथिया आदि सम्बन्धित विशेषताएं हो सकती हैं अर्थात् उद्देश्य परिवर्तित होने पर अन्तर्कूल विशेषताएं भी परिवर्तित हो जानी चाहिए। यदि यही वर्गीकरण पाठकों के लिए किया जाना हो तो विषय, भाषा, लेखक आदि सम्बन्धित विशेषताएं हो सकती हैं।

1.3 निश्चिन्ता का उपसर्ग (Canons of Ascertainability) : इस उपसर्ग के अनुसार वर्गीकरण के लिए जिस विशेषता को लिया जाए वे सुनिश्चित हों। वर्गीकरण के उद्देश्य से सम्बन्धित विशेषताएं तो अनेक हो सकती हैं लेकिन वर्गीकरण के लिए उन्हीं विशेषताओं को आधार बनाना चाहिए जो निश्चित हों। जैसे साहित्यकारों को वर्गीकृत करने के लिए जन्मतिथि को विशेषता माना गया है न कि उनकी रचनाएं।

1.4 स्थायित्व का उपसर्ग (Canons of Permanence) : इस उपसर्ग के अनुसार जिस विशेषताओं को वर्गीकरण का आधार बनाया जाय उनमें स्थायित्व होना बहुत आवश्यक है। इन विशेषताओं में तब तक कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए जब तक वर्गीकरण के उद्देश्यों में परिवर्तन नहीं हो जाता। जैसे—पत्रिकाओं के

उनके अंगों और समस्याओं को क्रमशः विशेषताओं के रूप में स्थान दिया।
 उदाहरण : द्विविन्दु वर्गीकरण पद्धति में मुख्यतः वनस्पति विज्ञान में वनस्पतियों की किस्में, महत्त्व है।

इस उपसूत्र के अनुसार ज्ञान वर्गीकरण के लिए एक बार निश्चित की गयी विशेषताओं के अनुसार तब तक वर्गीकरण के उद्देश्य अज्ञान का उस समय तक अनुसरण किया जाना चाहिए जब तक वर्गीकरण के उद्देश्य में कोई परिवर्तन न हो। इसका महत्त्व पद्धति में एकरूपता बनाए रखने की दृष्टि से विशेष

2.3 अनुत्पत्ता अनुक्रम का उपसूत्र (Canons of Consistent Succession) :

अनुक्रम का द्वितीय संस्करण में बदलकर पदार्थ और समस्या कर दिया गया।
 उदाहरण : कोलन वर्गासीकिकेशन के प्रथम संस्करण में मुख्यतः रसायन विज्ञान में निर्धारित करता है।

वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त विशेषताओं की क्रमबद्धता वर्गीकरण के उद्देश्यों के अनुरूप होना चाहिए। जब व्यक्तित्व विशेषता एक से अधिक होती है तो यह सूत्र उनके मध्य अनुक्रम

2.2 सम्बद्ध अनुक्रम का सिद्धान्त (Canons of Relevant Succession) :

होती हैं।

उदाहरण : व्यक्ति की जन्मतिथि और आयु के प्रयोग से जो वर्ग निर्मित होंगे वे एक जैसे एकल विचारों के वर्गों की उत्पत्ति नहीं होनी चाहिए।
 अर्थात् दो विशेषताएँ सहगामी नहीं होनी चाहिए अथवा उनके प्रयोग से एक ही प्रकार के किसी दो ऐसी विशेषताओं का प्रयोग एक साथ नहीं होना चाहिए जो आपस में सहवर्ती हों।
 इस उपसूत्र के अनुसार किसी विषय के अन्तर्गत आने वाले वर्गों के विभाजन के लिए

2.1 संलग्नता का उपसूत्र (Canons of Cancomitance) :

जाय। इसके लिए तीन उपसूत्र प्रयोग में लाए जाते हैं—
 निर्धारण करता है कि दो विशेषताओं में से पहले किस विशेषता को विभाजन का आधार बनाया है कि वर्गीकरण के लिए चयन की गई विशेषताओं का क्रम क्या होना चाहिए। यह उपसूत्र यह विशेषताओं का चयन करने के पश्चात् एक अन्य विन्दु जो ध्यान में रखना होता है वह यह

2. विशेषताओं के उत्तरागत प्रयोग के उपसूत्र (Canons for Succession of Characteristics) :

होते रहते हैं। अर्थात् इनके लिए प्रथम प्रकाशन वर्ष को आधार बनाया जाना चाहिए।
 वर्गीकरण का आधार उनके प्रायोजक को नहीं बनाया जा सकता क्योंकि इनमें परिवर्तन

इस उपसर्ज अन्वयार जब प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक वीसी वर्ग परिवर्तियों का प्रयोग किया गया है।
 द्विबिन्दु वर्गीकरण से सामान्य एकलौ तथा विधियों के प्रयोग द्वारा इस अन्वयम को प्राप्त
 जाना चाहिए। ऐसा करना वर्गीकार तथा उपयोगकर्ता दोनों के लिए स्पष्टि सहस्यक होगा।
 अन्वयवी की भिन्न-भिन्न परिवर्तियों से हो तो उन्हें सभी स्थानों पर एक ही अन्वयम से रखा

3.4 अन्वयता अन्वयम का उपसर्ज (Canons of Consistent Sequence) :

इस उपसर्ज के अन्वयार किसी वर्गीकरण पद्धति की अन्वयवियों से पठित एकलौ का
 व्यवस्थापन सुविधाजनक सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए न कि मनमाने ढंग से।
 सहस्यक अन्वयम के उपसर्ज के अनुपालन के लिए जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया
 है उन्हें सहस्यक अन्वयम के सिद्धान्तों के नाम से जाना जाता है।

3.3 सहस्यक अन्वयम का उपसर्ज (Canons of Helpful Sequence) :

इस उपसर्ज की मांग है जो विषय किसी एक वर्ग का उपविभाजन है, उसे किसी दूसरे वर्ग
 का उप विभाजन नहीं समझा जाना चाहिए अर्थात् वर्गों की परिवर्तियों से अतिव्यापकता नहीं
 होनी चाहिए। वर्ग परिवर्तियों के निर्माण से यदि इस उपसर्ज का पालन किया गया तो एक
 विषय को एक ही पठित से स्थान मिलेगा, अन्यत्र नहीं। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति से पक्ष
 विधि (Facet Device) के द्वारा इस उपसर्ज का पालन हुआ है। जहाँ प्रत्येक पक्ष पृथक-पृथक
 विशेषताओं पर आधारित होते हैं।

3.2 अनन्वयता का उपसर्ज (Canons of Exclusiveness) :

उदाहरण : द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति से एक ही पठित के ज्ञात सभी एकलौ की सम्भावना
 को देखते हुए उन्हें भी मविष्य से शासित करने के लिए खण्ड अंक विधि (Sector Notation
 Device), विषय विधि (Subject Device) आदि का प्रवधान किया गया है जिससे एक पठित
 हमेशा अपन से पूर्ण वर्गी रह सके।
 उल्लंघन होगा।

इस उपसर्ज के अन्वयार वर्गीकरण करते समय वर्गों की एक पठित से सभी ज्ञात विषयों को
 उपयुक्त स्थान पर समाविष्ट कर लेना चाहिए, अन्यथा परिवर्तियाँ अपूर्ण रह जाएगी अन्य
 शब्दों से वर्गों के विभाजन क्रम से किसी वर्ग पठित को स्थान न देना इस उपसर्ज का

3.1 सम्पूर्णता का उपसर्ज (Canons of Exhaustiveness) :

का अनुपालन किया जाना चाहिए।

3. पठित के उपसर्ज (Canons for Array) :

किसी भी वर्गीकरण पद्धति से प्रत्येक पठित के सभी वर्गों द्वारा निम्नलिखित चार उपसर्जों

उपर्युक्त शृंखला में यदि म.प्र. को हटा दें तो सागर को पहचानना कठिन हो जाएगा।

Continent	Asia
Country	India
State	M.P.
Distt	Sagar

किया जाना चाहिए।

इस उपसर्ज के अनुसार किसी शृंखला में उसके प्रत्येक क्रम की कड़ियों को सम्मिलित

4.2 अनुकूलन का उपसर्ज (Canons of Modulation) :

Class	Medicine	L
Main Class	Respiratory System	L4
	Lungs	L45
	Lung disease	L45 :4
	Lung infection	L45 : 42
	Tuberculosis of Lungs	L45 : 421

उदाहरण :

इस उपसर्ज के अनुसार शृंखला को ऊपर से नीचे की ओर बढ़ाना चाहिए। प्रथम कड़ी से अन्तिम कड़ी में वर्गों की गहनता में उल्लेखनीय वृद्धि होती जानी चाहिए। प्रथम कड़ी के वर्ग का विस्तार अधिक होगा जबकि अन्तिम कड़ी के वर्ग का विस्तार कम गहनता ज्यादा होगी।

4.1 विस्तार होस का उपसर्ज (Canons of Decreasing Extension) :

शृंखला से तात्पर्य है अधीनस्थ वर्गों के समूह जिसमें प्रत्येक निम्न वर्ग अपने उच्च वर्ग से सम्बन्धित हो तथा अधीनस्थ हो। यदि वर्गीकरण में इस प्रकार की शृंखला का निर्माण होता है तो निम्नलिखित उपसर्जों का अनुपालन किया जाना चाहिए—

4. शृंखला के उपसर्ज (Canons for Chain) :

उदाहरण :	Psychology	Child	Pre-secondary	Education	Sociology
	Pre-adolescent	Secondary	Youth	Old persons	
	Adolescent	Adult			

5. संसर्ग अनुक्रम के सिद्धान्त (Canons of Filiiatory Sequence) :

संसर्ग अनुक्रम का निर्माण तभी सम्भव है जब निम्नलिखित उपसर्गों का अनुपालन किया जाए—

5.1 अधीनस्थ वर्गों का उपसर्ग (Canons of Subordination Classes) :

इस उपसर्ग के अनुसार किसी श्रृंखला में किसी वर्ग का यदि कोई अधीनस्थ वर्ग आता है तो उसे भी शामिल कर लिया जाना चाहिए। अर्थात् एक वर्ग के सारे अधीनस्थ वर्गों को पहले लिया जाना चाहिए उसके बाद किसी अन्य वर्ग को।

उदाहरण : एक परिवार के निम्नलिखित सदस्यों को निम्नानुसार संसर्ग अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए —

दादा (Grand Father)

पहला पुत्र (First Son)

पहला पौत्र (First Grand Son)

दूसरा पौत्र (Second Grand Son)

दूसरा पौत्र (Third Grand Son)

दूसरा पुत्र (Second Son)

5.2 समकक्ष वर्गों का उपसर्ग (Canons of Co-ordination Classes) :

इस उपसर्ग के अनुसार किसी सम्मिलित पंक्ति में यदि दो वर्ग 'अ' और 'ब' हों और ये क्रम में लगातार हों इन्हें अलग नहीं करना चाहिए लेकिन यदि 'अ' के कुछ अधीनस्थ वर्ग भी हों तो उन्हें 'ब' से पहले रखना चाहिए।

उदाहरण :

अ

अ 1

अ 2

अ 3

अ 4

ब

नया नाम	पुराना नाम
Library Science	Natural Philosophy
Political Science	Political Economy
Physics	Library Economy

इस उपसर्ज के अनुसार किसी वर्ग को दिया गया नाम इस प्रकार होना चाहिए जो उस विषय की विशेषता के अनुसार नवीन व प्रचलित हो। वर्गीकरण पद्धति में किसी विषय विशेष के लिए प्रयोग में आए गए शब्द वही होना चाहिए जो वर्तमान में विषय विशेषों द्वारा प्रयोग में आए जाते हैं। जैसे - 'Book Selection' के स्थान पर 'Collection Development' शब्द को प्रयोग में लाया जाता है। इसी प्रकार निम्नलिखित विषयों के नाम में भी परिवर्तन हुआ है।

3. प्रचलन का उपसर्ज (Canons of Currency) :

अन्तर्गत रखा गया है जबकि द्विबन्धु में इसे अलग विषय का दर्जा दिया गया है।
उदाहरण : 'Physiology' शब्द का अर्थ एवं स्वरूप द्विबन्धु वर्गीकरण और दशमलव वर्गीकरण दोनों में अलग-अलग है। दशमलव वर्गीकरण में Psychology को Physiology के (वर्ग) के अन्तर्गत विभिन्न शृंखलाओं में आते हैं।

इस उपसर्ज के अनुसार किसी वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त किये गए शब्द का अर्थ एवं स्वरूप का निर्धारण उस शब्द के अधीनस्थ वर्गों के आधार पर किया जाना चाहिए जो शब्द

2. परिगणना का उपसर्ज (Canons of Enumeration) :

समान हो।
उदाहरण : 'Physiology' एक ऐसा शब्द जो Medicine, Botany, Animal Husbandary, Biology आदि सभी विषयों में आ सकता है। वर्गीकरण करने वाले को सभी विषय का निर्धारण करना चाहिए जब शब्द में इस शब्द का सन्दर्भ (Context) वर्गीकरण पद्धति में इस शब्द का संदर्भ आते हैं।

इस उपसर्ज के अनुसार किसी वर्गीकरण पद्धति के किसी पद के अर्थ का निर्धारण उन संदर्भ वर्गों के संदर्भ में किया जाना चाहिए जो उस पद की शृंखला में उस पद से ऊपर

1. सन्दर्भ का उपसर्ज (Canons of Context) :

शब्दावली का प्रयोग करके नाम देने का कार्य शाब्दिक स्तर पर किया जाता है। इस स्तर के कार्यों में चार सूत्रों का अनुपालन आवश्यक है—
वर्गीकरण करते समय वैचारिक स्तर पर सोचकर जो निर्णय लिये जाते हैं, उन्हें यथार्थित

2.3.3.2 शाब्दिक स्तर के कार्यों के उपसर्ज (Canons for works in the Verbal Plane)

1.3 साधकता का उपसर्ग (Canons of Relativity) :

Mercury - E128 (यह रसायन शास्त्र में एक द्रव्य है)

उदाहरण : Mercury - B 941 (यह खगोलशास्त्र में एक ग्रह है)

इस उपसर्ग के अनुसार एक वर्गिक द्वारा प्रदर्शित विषय या एकल प्रदर्शित नहीं किये जाने चाहिए। एक वर्गिक द्वारा दो या दो से अधिक विषय या एकल प्रदर्शित नहीं किये जाने चाहिए।

1.2 भिन्नार्थक (समानाम) सम्बन्धी उपसर्ग (Canons of Homonym) :

उदाहरण दो रक्त हैं।

गण्ड है एक 44 (इंडिया) दूसरा 2 (Mother Country)। यहाँ पर स्पष्ट रूप से इस रक्त का पालन किया गया है लेकिन स्थान के एकल में इंडिया के लिए दो अंकन प्रयोग में लाए सख्या या प्रतीक द्वारा होना चाहिए। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में कड़ाई से इन उपसर्ग का चाहिए। इसी प्रकार एक ही एकल विचार का प्रतिनिधित्व भी एक और केवल एक ही एकल द्वारा हो, दूसरे शब्दों में किसी एक ही विषय के दो या दो से अधिक वर्गिक नहीं होने इस उपसर्ग के अनुसार प्रत्येक विषय का प्रतिनिधित्व एक और केवल एक ही वर्गिक के

1.1 समानार्थक सम्बन्धी उपसर्ग (Canons of Synonyms) :

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित उपसर्गों की व्याख्या की गयी है—

1. अंकन के मूलभूत उपसर्ग (Basic Canons of Notation) :

एक वर्गीकरण पद्धति में विषयों एवं एकल विचारों को उनकी विशेषताओं के आनुकम्बिक प्रयोग के आधार पर सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है। डॉ. रंगनाथन के अनुसार किसी वर्गीकरण पद्धति में प्रयोग किये जाने वाले अंकन का चयन कुछ उपसर्गों के अनुसार किया जाना चाहिए। अंकन स्तर के कार्यों को पूर्ण करने में निम्नलिखित उपसर्गों का अनुपालन आवश्यक है—

2.3.3 अंकन स्तर के कार्यों के उपसर्ग (Canons for works in the Notational Plane)

जाये वे विवरणात्मक हों कि तर्कात्मक।

यह उपसर्ग के अनुपालन में यह आवश्यक है कि जिन शब्दों का उपयोग किया आलोचनात्मक नहीं होना चाहिए न ही उसमें किसी वर्गीकरण की व्यक्तित्व राय होनी इस उपसर्ग के अनुसार किसी वर्गीकरण पद्धति में किसी वर्ग को दिया जाने वाला नाम

4. शिष्टता का उपसर्ग (Canons of Relicence) :

इस उपसर्ज के अनुसार किसी वर्गीकरण पद्धति में जिस अंकन पद्धति को आधार बनाया जाये उनमें दो या दो से अधिक प्रकार के अंकों का प्रयोग किया जाना चाहिए। मिश्रित अंकन पद्धति के अपनाने से वर्गीकरण पद्धति की क्षमता बढ़ जाती है। तथा इसमें कई प्रकार के अंकन का प्रयोग करने के कारण वर्गीकृत होता है।

1.7 मिश्रित अंकन का उपसर्ज (Canons of Mixed Notation) :

इस उपसर्ज के अनुसार वर्गीकृत प्रत्येक विशेषता के लिए एक अंक का होना आवश्यक नहीं है। इस उपसर्ज के अनुपालन करने पर वर्गीकृत होता है। लेकिन इसमें वर्गीकृत द्वारा प्रत्येक विशेषता को स्पष्ट करने की क्षमता समाप्त हो जाती है। इस उपसर्ज से मिलव्यता सिद्धान्तों का अनुपालन होता है।

1.6 सौपानकम स्तरीय का उपसर्ज (Canons of Non-Hierarchy) :

इस उपसर्ज के अनुसार किसी विषय के वर्गीकृत में उनमें से प्रत्येक विशेषता के लिए एक अंक होना चाहिए, जिन विशेषताओं को वर्गीकरण का आधार बनाया गया है। सापेक्षता एवं सौपानकमिक उपसर्ज एक-दूसरे के काफी कटीब है।

1.5 सौपानकमिक का उपसर्ज (Canons of Hierarchy) :

इस उपसर्ज के अनुसार किसी विषय का कोई वर्ग या एकल कितना ही गहनता या विस्तार का क्या न हो उसके लिए प्रयोग में जाए गए अंकों की संख्या समान होनी चाहिए। यह उपसर्ज सापेक्षता के उपसर्ज के विपरीत है।

1.4 एकस्वता का उपसर्ज (Canons of Uniformity) :

Physics	C
Light	C5
Diffraction	C5 : 3
Spectrum	C5 : 31
Ultra Violet Spectrum	C 52 : 31
Raman effect	C53 : 38 N 28

उदाहरण :

इस उपसर्ज के अनुसार एक वर्गीकृत अथवा एकल संख्या के लिए प्रयुक्त अंकों की संख्या इस विषय अथवा एकल विचार के आधार के विस्तार के अनुपाल में होने चाहिए, जिसका वह वर्गीकृत अथवा एकल संख्या प्रतिनिधित्व कर रहा है।

- Library Science
University Library
Cataloguing in Uni. Library
Cataloguing of Maps in
University Libraries
234;17 : 55
- उदाहरण :
कहते हैं—
इस उपसर्ग के अनुसार वर्गीकरण करते समय उसके उद्देश्य से सम्बन्धित सभी विशेषताओं को अंक दिये जाने चाहिए। इस प्रकार जो वर्गक निर्मित होता है उसे सह विस्तृत वर्गीक
- 1.11 सहविस्तृता का उपसर्ग (Canons of Co-extensiveness) :
एक पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति में अंकन के विस्तार की क्षमता अपक्षात्मक पद्धति की तुलना में अधिक होती है।
- अ. जब अंकन के आधार की लम्बाई 56 हो और ज्ञान जगत के विषयों की संख्या 1000000000 से अधिक होने की सम्भावना न हो।
ब. जब अंकन के आधार पर लम्बाई 56 हो और ज्ञान जगत के विषयों की संख्या लाख और इससे अधिक न हो।
अ. जब अंकन के आधार की लम्बाई 10 हो और ज्ञान जगत के विषयों की संख्या दस इस अंकन पद्धति का प्रयोग निम्नलिखित दो परिस्थितियों में करना चाहिए—
- 1.10 अपक्षात्मक अंकन का उपसर्ग (Canons of Non-Faceted Notation) :
संख्या 1000000000 से अधिक होने की सम्भावना हो।
अ. जब अंकन के आधार की लम्बाई लगभग 56 हो और ज्ञान जगत के विषयों की संख्या लाख और इससे अधिक होने की सम्भावना हो।
ब. जब अंकन के आधार की लम्बाई 10 हो और ज्ञान जगत के विषयों की संख्या 10 दो परिस्थितियों में करना चाहिए—
- पक्षात्मक अंकन के उपसर्ग के अनुसार एक पक्षात्मक अंकन पद्धति का प्रयोग निम्नलिखित
- 1.9 पक्षात्मक अंकन का उपसर्ग (Canons of Faceted Notation) :
केवल एक ही प्रकार के अंकों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
शुद्ध अंकन के उपसर्ग के अनुसार किसी वर्गीकरण पद्धति में अंकन के आधार के रूप में
- 1.8 शुद्ध अंकन का उपसर्ग (Canons of Pure Notation) :

इस उपसर्ज के अनुसार किसी वर्गीकरण पद्धति की वर्ग पंक्तियाँ में प्रयुक्त पंक्ति एकल विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए अंकन धरातल पर जिन अंकों का प्रयोग किया जाय वे सहायक अर्जकम के सिद्धान्तों के अन्तर्गत होना चाहिए इसके लिए सहायक अर्जकम के सिद्धान्तों का पालन करना आवश्यक है।

2.3 व्यवस्थित स्मृति सहायक के उपसर्ज (Canons of Systematic Mnemonics) :

इस उपसर्ज के अनुसार मुख्य वर्गों में किसी विधिष्ट एकल विचार अथवा पंक्ति एकल विचार को अभिव्यक्त करने के लिए केवल एक ही प्रकार के अंक अथवा अंकों के समूह का प्रयोग किया जाना चाहिए। ऐसा करने से अर्जकमों का आकार छोटा होता है तथा नित्यता के नियम का भी पालन होता है। द्विविन्दु वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल, काल एकल, स्थान एकल, भाषा एकल इसके उदाहरण हैं।

2.2 अर्जकमों के स्मृति सहायक के उपसर्ज (Canons of Scheduled Mnemonics) :

Basmati Rice	J301B
Gandhiana	ZG
Maruti Car	D 5133M

उदाहरण :

ने इसे Literal Mnemonics नाम दिया है। नाम को व्यक्त करने के लिए उस विषय के प्रथम अक्षर का प्रयोग करने से है। एच.ई.ब्लिस शब्दिक स्मृति सहायक अंकन का अर्थ किसी विषय या एकल विचार, वस्तु या सत्ता के नाम को व्यक्त करने के लिए उस विषय के प्रथम अक्षर का प्रयोग करने से है। एच.ई.ब्लिस

2.1 शब्दिक स्मृति सहायक के उपसर्ज (Canons of Verbal Mnemonic) :

इस उपसर्ज से तात्पर्य किसी वर्गीक में किसी अवधारणा को प्रदर्शित करने वाले अंक या अंकों के समूह सभी वर्गीकों में समान होना चाहिए जहाँ-जहाँ यह अवधारणा आ रही हो। डॉ. रंगनाथन ने स्मृति सहायकों की विचारधारा के महत्व को मनी-भाति समझा है। आपने निम्नलिखित स्मृति सहायक अंकों का उल्लेख किया है-

2. स्मृति सहायक के उपसर्ज (Canons for Mnemonics) :

गया है।

इस उपसर्ज के अनुसार वर्गीकरण के उद्देश्य के अन्तर्गत लिये गए सभी वर्गों के वर्गीक में अंक देना आवश्यक नहीं है। राइडर्स वर्गीकरण पद्धति में इस उपसर्ज का पालन किया

1.12 असहस्रता का उपसर्ज (Canons of Non-Co extensiveness) :

यदि आवश्यक हो तो किसी पंक्ति के बीच में भी समानान्तर स्तर के एकलौ को शामिल किया

3.2 पंक्ति में अन्तर्वेशन के उपसर्ज (Canons of Interpolation in Array) :

इस उपसर्ज के अनुसार किसी पंक्ति के प्रारम्भ में या अन्त में समानान्तर स्तर के एकलौ को शामिल किया जाना चाहिए। इसके लिए अन्तराल विधि (Gap device), खण्डात्मक अंकन (Sectionising digit) तथा मिश्रित आधार (Mixed base) सहायक है।

3.1 पंक्ति में वृद्धिर्वेशन के उपसर्ज (Canons of Extrapolation in Array) :

इस उपसर्ज के अनुसार किसी भी वर्गीकरण पद्धति में ज्ञान जगत में होने वाली परिवर्तनों के साथ सामंजस्य या इस परिवर्तन को आत्मसात करने की क्षमता होना आवश्यक है इसके लिए निम्न उपसर्जों का अनुपालन आवश्यक है—

3 ज्ञान के बढ़ते स्वरूप के उपसर्ज (Canons for Growing Universe) :

Library Science	Functions	2:3
Biology	Physiology	G : 3
Sociology	Activity	Y : 3
Economics	Distribution	X : 3
Education	Techniques	T : 3
Chemistry	Analysis	E : 3

उदाहरण :

इस उपसर्ज के अनुसार किसी वर्गीकरण पद्धति में एक अवधारणा से मिलते-जुलते सभी विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए समान अंकों का प्रयोग करना चाहिए।

2.4 मौलिक स्यूटि सहायक के उपसर्ज (Canons of Seminal Mnemonics) :

Q1	Hinduism, Vedic
Q2	Hinduism, Post Vedic
Q3	Jainism
Q4	Buddhism
Q5	Judaism

उदाहरण :

विषय में जितनी भी वर्गीकरण पद्धतियाँ को निर्मित किया गया है उन सबमें द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति सैद्धांतिक दृष्टि से सर्वाधिक अग्रणी है क्योंकि संग्रहण इसके लिए नियमों (Laws), सिद्धान्तों (Principles) तथा उपसूचियों (Canons) आदि का प्रयोग किया है।

इस उपसूचन की मांग है कि जब आख्यान संख्या (Call number) लिखा जाय तो वर्गीक, शृंखला तथा संग्रहांक के मध्य इतनी जगह अवश्य होनी चाहिए कि ये अलग-अलग स्पष्टतः दिखाई दें।

3. सूच्यता का उपसूचन (Canons Distinctiveness) :

इस उपसूचन के अनुसार किसी शृंखला वर्गीकरण पद्धति में संग्रहांक की अनुसूची भी होनी चाहिए जिससे विशेष प्रकार के प्रलेखों के संग्रह को उनकी विशेषताओं, दुर्लभता आदि के आधार पर विभाजन किया जा सके।

2. संग्रहांक का उपसूचन (Canons of Collection number) :

इस उपसूचन के अनुसार शृंखला वर्गीकरण पद्धति में शृंखलांक के निर्माण हेतु भी प्राधान्य होना चाहिए जिससे कि एक समान विषय की पुस्तकों को व्यवस्थापन में सुनिश्चित एवं पृथक पृथक देना ही प्राधान्य है।

1. शृंखलांक के उपसूचन (Canons for Book numbers) :

शृंखला वर्गीकरण के संदर्भ में संग्रहण ने निम्न तीन उपसूचन बताए हैं—

2.3.3.4 शृंखला वर्गीकरण के उपसूचन (Canons for Book Classification)

इस उपसूचन के अनुसार किसी वर्गीकों की शृंखला में लगातार दो एकल या वर्गों के बीच कोई एकल का अन्तर्वेशन करने की आवश्यकता हो तो प्राधान्य होना चाहिए। इस उपसूचन के अनुपालन से अनुकूलन के उपसूचन की अवहेलना होती है।

3.4 शृंखला में अन्तर्वेशन के उपसूचन (Canons of Interpolation in Chain) :

किसी वर्गीक की शृंखला में यदि आवश्यक हो तो इसके अन्त में अधीनस्थ क्रम के एकल को अन्तर्गत विधि तथा दशमलव खण्ड विधि की सहायता से शामिल किया जा सकता है।

3.3 शृंखला में बहिर्वेशन के उपसूचन (Canons of Extrapolation in Chain) :

जाना चाहिए। इसके लिए अन्तराल विधि (Gap device), मिश्रित आधार (Mixed base) रिक्तोंक अंक (Emptying digits) तथा रिक्त रिक्तोंक अंक (Empty Emptying digits) सहायक है।

गया है-

तल से ऊपर की ओर के सिद्धान्त का अर्थ है कि जो वर्ग सबसे नीचे स्थित है, उसे पहले और अन्य को क्रमशः उसके बाद तल के ऊपर की ओर व्यवस्थित किया जाता है। मुख्य वर्ग Botany (I) में पौधों के विभिन्न भागों को इसी सिद्धान्त के आधार पर व्यवस्थित किया

31. तल से ऊपरी और सिद्धान्त (Principles of Bottom to Top) :

ब. ऊपर से नीचे की ओर सिद्धान्त (Principles of Top to Bottom) :

अ. तल से ऊपरी और सिद्धान्त (Principles of Bottom to Top) :

करना चाहिए।

समीपता के आधार पर निम्नलिखित दो सिद्धान्तों में से किसी एक के आधार पर व्यवस्थित यदि वर्गों की स्थिति इस प्रकार हो कि वे एक खड़ी रेखा पर स्थित हैं तो उन्हें भौगोलिक

3.1 खड़ी रेखा पर स्थित वर्गों के सिद्धान्त (Principles for Entities along a vertical line) :

करना चाहिए। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत निम्न लिखित युग्म आते हैं-

डॉ. रंगनाथन ने इस सिद्धान्त को परस्पर विरोधाभासी युग्मों में प्रस्तुत किया है तथा इन युग्मों में से जो भी अधिक सहायक अनुक्रम प्रदान करता है, उसका उचकम का अनुसरण

3. स्थानीय समीपता का सिद्धान्त (Principles of Special Contiguity) :

GAE	Old
GAD	Adolescent
GAC	Child
GAB	Embryo

उदाहरण :

विशिष्ट वर्गों को व्यवस्थित किया गया है।

इस सिद्धान्त के अन्तर्गत विषय के समस्त अवयव विकास क्रम की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को प्रदर्शित करते हैं। विकास क्रम में जो अवस्था पहले आयी हो उसे पहले स्थान पर तथा बाद में आने वाली अवस्थाओं को क्रमशः बाद में रखा जाता है। द्विविन्दु वर्गीकरण में इस सिद्धान्त के आधार पर मुख्य वर्ग Biology (G), Botany (I), Medicine (L) तथा Zoology (K) के

2. परवर्ती विकास का सिद्धान्त (Principles of Later-in-Evolution) :

- Motor Car
- Heavy motor vehicle
- Bicycle way
- Cart way
- Pedestrian way
- Kerb
- Loope line for rest

इसी प्रकार वर्गों को पीछे से आगे की ओर या आगे से पीछे की ओर व्यवस्थित किया जा सकता है।

3.3 वृत्त रेखा पर स्थित वर्गों के लिए सिद्धान्त

(Principles for Entitles along Circular line) :

यदि वर्गों की स्थिति ऐसी हो कि वे एक वृत्त या गोल या लगभग गोलकार स्थिति में हों तो उन्हें निम्नलिखित दो सिद्धान्तों के आधार पर व्यवस्थित किया जाना चाहिए—

अ. घड़ी की सुई की दिशा में (Clockwise direction) :

ब. घड़ी की सुई की विपरीत दिशा में (Anti Clockwise direction) :

पृथ्वी के विभिन्न भू-भाग जैसे—महाद्वीप, देश, प्रदेश, शहर इत्यादि प्रायः अनिर्देशित दिशाओं में टेढ़े-मेढ़े स्थित होने के कारण इन्हें व्यवस्थित करने हेतु एक सिद्धान्त का अनुपादन नहीं किया जा सका है। यही कारण है कि रंगनाथन ने स्थानीय समीपता के अनेक सिद्धान्त बनाए हैं तथा आवश्यकतानुसार विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग सिद्धान्तों का प्रयोग किया गया है। डॉ. रंगनाथन ने एशिया महाद्वीप के देशों को पूर्व दिशा से पहिलम दिशा की ओर गोलकार अनुसर व्यवस्थित किया है। इसीलिए एशिया महाद्वीप के देशों को China (41), Japan (42), South East Asia (43), India (44), Iran (45) तथा Siberia (48) एक चक्कर में पूरा किया है।

उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के देशों की स्थिति समानान्तर है, अतः इनका व्यवस्थापन उत्तर से दक्षिण की ओर करना सुविधाजनक एवं सहजक सिद्ध हुआ है।

उदाहरण : North America

71

Greenland

7191

उदाहरण :	Bone	L82
	Muscle	L83
	Connective tissue	L86
	Skin	L87
	Hair	L88

इस पद्धति में मानव अंगों, प्रत्यों का व्यवस्थापन केन्द्र से परिधि की ओर के सिद्धान्त पर आधारित है। इसमें हड्डी को केन्द्र मानकर आस-पास के अंग प्रत्यों को क्रमशः एक के बाद एक व्यवस्थित किया गया है। इसी प्रकार इसे विलोम क्रम में व्यवस्थित किया जाय तो यह परिधि से केन्द्र की ओर सिद्धान्त का अनुपालन होगा।

- अ. परिधि से केन्द्र की ओर
ब. केन्द्र से परिधि की ओर

चाहिए।

यदि वर्गों की स्थिति किसी वृत्त के अर्द्धव्यास के साथ-साथ हो तो उन्हें व्यवस्थित करने के लिए निम्नलिखित दो सिद्धान्तों में से जो अधिक उपयुक्त हो, का प्रयोग किया जाना चाहिए।

3.4 वृत्त के अर्द्धव्यास पर स्थित वर्गों के लिए सिद्धान्त (Principles for Entities along a Radial line) :

उदाहरण :	Queensland	81
	New Southwals	82
	Victoria	83
	South and Central Australia	84
	North Australia	86

करना अधिक सहायक सिद्ध हुआ है।

जबकि आस्ट्रेलिया महाद्वीप के देशों को इसके विपरीत दक्षिण से उत्तर की ओर व्यवस्थित

72	Canada
73	USA
74	Mexico
75	Central America
76	Alaska
77	Panama

द्विन्दु वर्गीकरण में प्रामाणिक वर्ग B6 Geometry में आकृतियों के विभिन्न आयामों को बढ़ते क्रम में व्यवस्थित किया गया है। इसी प्रकार NB Town Planning में जनसंख्या को आधार मानकर पहले गांव, फिर कस्बा, शहर आदि वर्गों को बढ़ते क्रम में व्यवस्थित किया गया है। इन्हें विगम क्रम में व्यवस्थित कर मात्रा द्वारा सिद्धान्त का अनुपालन किया जा सकता है।

ब. परिमाण या मात्रा द्वारा सिद्धान्त (Decreasing Quantity) :

अ. परिमाण या मात्रा वृद्धि का सिद्धान्त (Increasing Quantity) :

जा सकता है—

इस सिद्धान्त के अनुसार किसी वर्ग, पंक्ति में अवयवों का व्यवस्थापन परिमाण (Quantities) या मात्रा (Number) के आधार पर किया जाता है। इसमें वर्गों को दो प्रकार से व्यवस्थित किया

4. परिमाण, संख्या या मात्रा का सिद्धान्त (Principles for Quantitative Measures) :

उदाहरण : Mercury	B941
Venus	B942
Mars	B943
Astroid	B944
Jupiter	B945
Saturn	B946

द्विन्दु वर्गीकरण में प्रामाणिक वर्ग खगोलशास्त्र (Astronomy) में ग्रहों (Planets) को दूरी के सिद्धान्त पर व्यवस्थित किया गया है। इसमें पृथ्वी को आधार बनाया गया है। इसी प्रकार इसको विगमक्रम में व्यवस्थित कर दूरी द्वारा सिद्धान्त का अनुपालन किया जा सकता है।

ब. दूरी द्वारा सिद्धान्त (Decreasing distance) :

अ. दूरी वृद्धि का सिद्धान्त (Increasing distance) :

ऐसे स्थित वर्गों को दो प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है।

यदि वर्ग किसी एक निश्चित केन्द्र बिन्दु से दूरी के आधार पर व्यवस्थित किये जा सकें तो

3.5 एक स्थल से वर्गों की दूरी का सिद्धान्त (Principles of Away from position) :

उदाहरण : Sound	P, 1
Syllable	P, 2
Word	P, 3
Phrasa	P, 4
Clause	P, 5
sentence	P, 6
Pince of composition	P, 7
Punctuation	P, 3

अवयवों को व्यवस्थित किया जाता है।

जटिलता होने पर सबसे कम जटिलता वाले अवयव को पहले एवं बढ़ते हुए जटिलता के क्रम में विषय वर्ग के अवयवों में जैसे-जैसे जटिलता वृद्धि होती है अर्थात् अलग-अलग अंशों में

5. जटिलता वृद्धि का सिद्धान्त (Principles of Increasing Complexity) :

World library	211
National library	213
Regional library	214
State library	215

इस प्रकार पुस्तकालयों की संख्या दोस के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है।

2.	Village	NB, 1
	Town	NB, 3
	City	NB, 5
	Metropolis	NB, 7

उदाहरण : 1. Line	B61
Plane	B62
Three dimension	B63
Four dimension	B64
Five dimension	B65

०५

उब वगी की किली अन्य सिद्धान्त के आधार पर सहायक अर्जकम में व्यवस्थित करना सम्भव न हो तो उनके नाम के प्रथम अक्षर या आवश्यकतानुसार अधिक अक्षरों से, वर्णकम में व्यवस्थित कर देना चाहिए। उन्ही नामों का प्रयोग करना चाहिए जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित

8. वर्णानुक्रम का सिद्धान्त (Principles of Alphabetical Sequence) :

उदाहरण : Food reeds	J38
Rice	J 381
Wheat	J382
Oat	J383

इस सिद्धान्त में विषय वर्गों में प्रकाशित पाठ्य सामग्री के प्रकाशन मात्रा के क्रमानुसार व्यवस्थित किया जाता है। Literary Warrant शब्द का प्रयोग सबसे पहले एक विशिष्ट लाइब्रेरियन द्वारा ही किया था। इसका तात्पर्य एक विषय पर प्रकाशित पाठ्य-सामग्री की संख्या से है। इस सिद्धान्त का अभिप्राय है कि किसी मुख्य वर्ग के पठित वर्गों को उन वर्गों पर प्रकाशित पाठ्य-सामग्री के घटते हुए क्रम के आधार पर व्यवस्थित करना चाहिए। डॉ. रंगनाथन के अनुसार उब अन्य किली सिद्धान्त का प्रयोग करने पर वर्गों को सहायक अर्जकम में व्यवस्थित करना सम्भव न हो, तभी इसी सिद्धान्त का प्रयोग करना चाहिए। यह पक्षपात रहित होना चाहिए।

7. साहित्यिक मांग का सिद्धान्त (Principles of Literary Warrant) :

B1	Arithmetic
B2	Algebra
B3	Analysis

उदाहरण : 1. मुख्य वर्ग B Mathematics में

उब किली मुख्य वर्ग के पठित वर्गों को पूर्व में वर्णित किली सिद्धान्तों के आधार पर सहायक अर्जकम में व्यवस्थित करना सम्भव न हो, तो उन्हें पारम्परिक अर्जकम में ही व्यवस्थित कर देना चाहिए। प्रचलित अर्जकम का कोई सैद्धान्तिक आधार हो, यह आवश्यक नहीं है। कोलन क्लासीफिकेशन के अनेक मुख्य वर्गों को इसी आधार पर व्यवस्थित किया है।

6. गामाणिक अर्जकम का सिद्धान्त (Principles of Canonical Sequence) :

विभिन्न वर्गीकरण

इस सिद्धान्त के अनुसार यदि किसी विषय में पक्ष 'ब' का प्रयोग पक्ष 'अ' के अंग अथवा

2. समष्टि अंग का सिद्धान्त (Whole organ Principles) :

Application of manure J : 2 : 3

Use of cow milk KX311 : 71:97

अन्य उदाहरण :

उपर्युक्त उदाहरण में ऊर्जा के दो आवर्तनों का प्रयोग किया गया है। द्वितीय आवर्तन (2E) Treatment के लिए प्रयोग किया गया है तथा इससे पूर्व disease को रखा गया है। क्योंकि Treatment तथा किया जाएगा जब disease होगी।

उदाहरण : Treatment of Disease L : 4 : 6

डॉ. रंगनाथन ने इस सिद्धान्त को 1962 में एक ही मूलभूत श्रेणी से सम्बन्धित एकल विचारों को एक सुनिश्चित क्रम में प्रदान करने के लिये किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार यदि किसी विषय के दो पक्ष 'अ' और 'ब' इस प्रकार के हैं पक्ष 'ब' बिना पक्ष 'अ' के कियाशील नहीं हो सकता तो पक्ष 'ब' को पक्ष 'अ' के बाद रखा जाना चाहिए। जिस प्रकार किसी विज्ञ को लगाने के लिए दीवार का होना आवश्यक है।

1. भित्तिचित्र सिद्धान्त (Wall-picture Principles) :

सिद्धान्त निम्नलिखित है—

समस्या का समाधान करने तथा बर्तकार को मार्गदर्शन प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई है। ये सहायक अनुक्रम प्रदान करने की दृष्टि से कतिपय सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। जो उक्त डॉ. रंगनाथन ने एक श्रेणी के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाले एक से अधिक एकल विचारों को

2.3.5 पक्ष अनुक्रम के सिद्धान्त (Principles of Facet Sequence)

1.	Rice	J 381
	Basmati Rice	J381B
	Parnal	J381P
2.	Cycle	D5125
	Atlas	D5125 A
	Hero	D5125 H
	Hercules	D5125 HE

Cotton - Actand
 Spinning - Action
 Women - Actor
 Machine - Tool

उदाहरण : Spinning of cotton with machine by women इसे इस प्रकार विश्लेषित किया जा सकता है।

इसी सिद्धान्त के समान है इसमें केवल commodity शब्द को जोड़ दिया गया है।
 जिसका नाम 'Commodity Raw material transformation-transformer principle' है। यह सिद्धान्त पूर्व
 को अन्वय 'अ,ब,स,द' होना चाहिए। डॉ. रंगनाथन ने एक अन्य सिद्धान्त भी प्रतिपादित किया है
 प्रदर्शित करता है। यह कार्यशीलता पक्ष 'स' के द्वारा पक्ष 'द' के साथ व्यक्त करता है तो इन चारों
 इस सिद्धान्त के अनुसार यदि किसी विषय में पक्ष 'ब' अपनी कार्यशीलता पक्ष 'अ' पर

4. प्रभाषित-कार्यशील-कर्ता-उपकरण सिद्धान्त (Actand Action-Actor-Tool Principles):

नहीं किया जा सकता है।

सकते हैं उसी प्रकार दूसरे उदाहरण में Treatment (Radiotherapy) तथा Treatment को पृथक
 उपर्युक्त प्रथम उदाहरण में रंगनाथन एवं इलेक्ट्रिसिटी कमी भी पृथक नहीं किये जा

Treatment by radiotherapy L : 4 : 625

उदाहरण : Transmission of electricity D66,2

सम्बद्ध दो पक्षों को भी अलग-अलग नहीं किया जा सकता।

के बछड़े को जो अभी दूध पीता है, गाय से पृथक नहीं किया जा सकता। उसी प्रकार परस्पर
 चाहिए। डॉ. रंगनाथन ने इसे गाय-बछड़ा सिद्धान्त नाम इसलिए दिया कि जिस प्रकार एक गाय
 न हो, भले ही वे पृथक-पृथक दिखाई दे रहे हों। ऐसी स्थिति में दोनों पक्षों को साथ-साथ रखना
 जब दो पक्ष 'अ' एवं 'ब' एक ही विषय से इस प्रकार सम्बद्ध हों कि उन्हें पृथक करना संभव

3. गाय-बछड़ा सिद्धान्त (Cow-Calf Principles):

Tyre of a cycle D 5125, 1

Eyes of a bird K 96, 185

उदाहरण : President of USA V73, 1

भाग के रूप में हुआ है तो 'ब' से पूर्व 'अ' पक्ष को रखा जाना चाहिए। अर्थात् अंग को व्यक्त करने
 वाले एकल पक्ष से पूर्व सम्बन्ध को व्यक्त करने वाले एकल पक्ष को रखा जा चाहिए।



1. द्विबन्ध वर्गीकरण के उद्भव एवं विकास की चर्चा करें।
2. वैचारिक स्तर के उपसूचों की व्याख्या करें।
3. पक्ष अङ्कन के सिद्धान्तों की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

2.5 स्व-जाँच अभ्यास (Self-check Exercise)

इस इकाई में द्विबन्ध वर्गीकरण के मौलिक सिद्धान्त के तहत आने वाली श्रेणियाँ, नियम, उपसूच, सहायक अङ्कन व पक्ष अङ्कन की चर्चा की गई है। द्विबन्ध वर्गीकरण पद्धति के कुल 7 संस्करण अब तक प्रकाशित हो चुके हैं; इसमें पाँच मूलभूत श्रेणियाँ, संयोगी चिन्ह, विधियाँ, दशा सम्बन्ध, भाषा एकल, स्थान एकल, सर्वमान्य एकल तथा समय एकल आदि का प्रावधान है जिससे विषयों के वर्गीकरण में सहायता मिलती है; इसके प्रथम संस्करण में केवल द्विबन्ध (:) का ही प्रयोग किया था इसी आधार पर डॉ. रंगनाथन ने इसका नाम द्विबन्ध वर्गीकरण पद्धति रखा।

2.4 सारांश (Let us Sum up)

- इकाई - 2 - ग्रामीण वर्गीकरण पद्धति में वर्तमान प्रवाह
- इकाई - 1 - द्वितीय वर्गीकरण के विभिन्न स्तर

खण्ड - 3

इकाई - 2	द्वितीय वर्गीकरण
इकाई - 1	सांख्यिक दशमलव वर्गीकरण

खण्ड - 2

- इकाई - 2 - दशमलव वर्गीकरण पद्धति के संस्करण 20 एवं 21 का वर्णनात्मक अध्ययन
- इकाई - 1 - दशमलव वर्गीकरण पद्धति (डीडीसी)

खण्ड - 1

- परिचय शीर्षक - पुस्तकालय वर्गीकरण : प्राथमिक
- परिचय का नाम - BLIS